खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की त्रैमासिक पत्रिका; संयुक्तांक; जनवरी-जून, २०१८

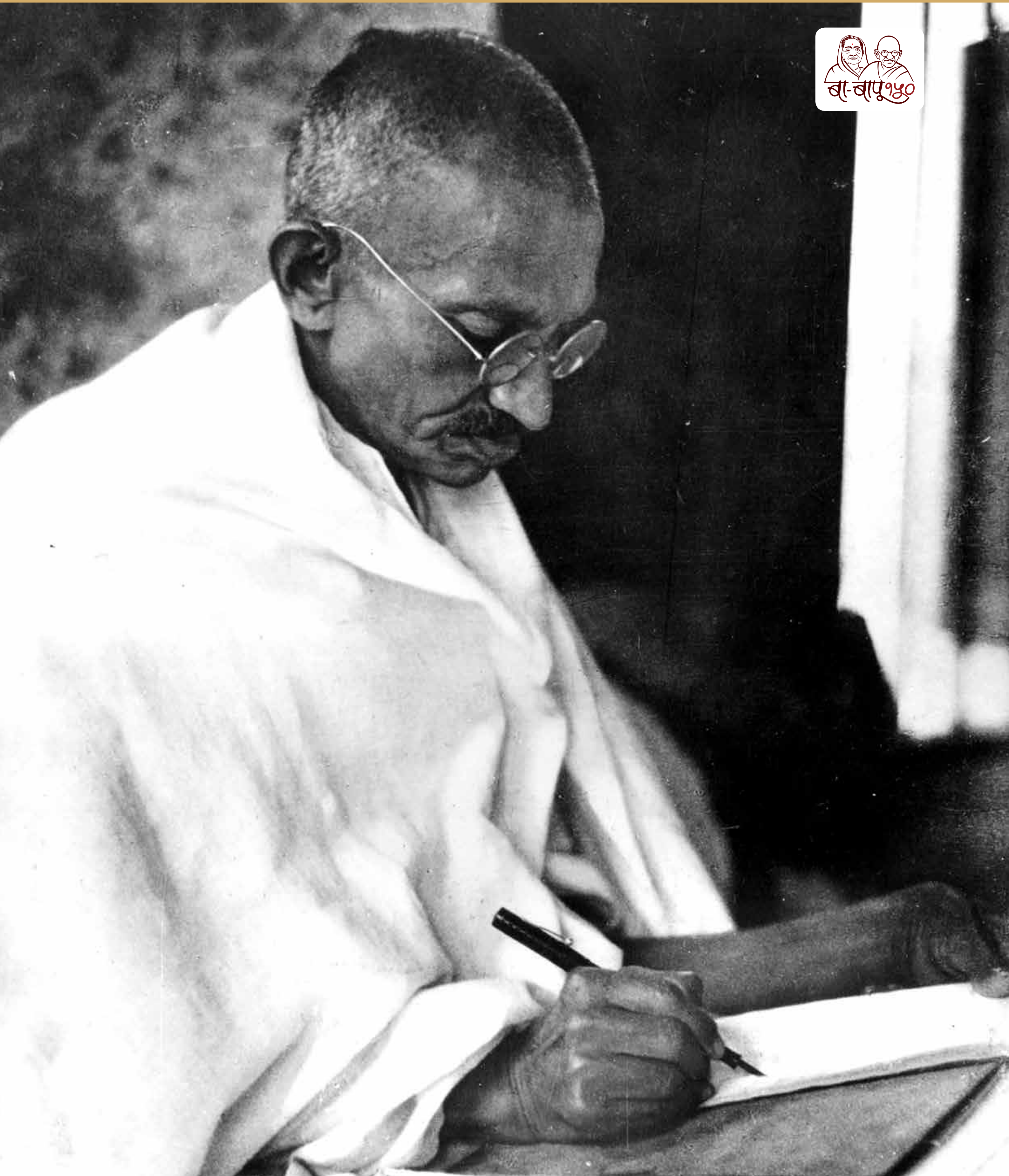

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित -

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष-२, अंक १-२ □ संयुक्तांक, जनवरी-जून, २०१८

स्त्री अहिंसा की मूर्ति है।

- महात्मा गाँधी

इस अंक में- ....पृष्ठ

संपादकीय... १
महाप्रदर्शनी २
कस्तूरबा जीवन-झांकीः समय के दायरे में - *(डॉ. सुदर्शन आयंगार)*...........३
बाः कस्तूरी-सुगंध - *(न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी)* ५
Gandhi And Music - *(प्रो. गीता धर्मपाल)*.............................. ६
आज की समाज रचना - *(डॉ. भवरलालजी जैन)*............................ ८
फाउण्डेशन की गतिविधियां...९-२०

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

मार्गदर्शक
न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर-सज्जा
भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव - 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मो.: 9404955272
फैक्स : 0257-2261133
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net
ई-मेल : info@gandhifoundation.net
CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह त्रैमासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन इन्होंने आनंद पब्लिकेशन्स्, १०६/१, मुसली फाटा, ता. धरणगाँव, जि. जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र। यहाँ से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र यहाँ से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।

सभी चित्र गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संग्रह से।

संपादकीय...

विश्व की बड़ी विरांगना – कस्तूरबा

बापू के आदर्श लियो टॉल्सटॉय, हेनरी डेवीड थोरो, गोपाल कृष्ण गोखले और श्रीमद राजचंद्र थे। किंतु कभी यह सोचा है कि कस्तूरबा के आदर्श कौन थे? सवाल गहरा है। बा के आदर्श को समझना है तो उनके पूरे जीवन झांकी को देखने की आवश्यकता है, उनके द्वारा किए गए कार्य को समझने कि आवश्यकता है। कस्तूरबा सकल गुण संपन्न थे ऐसा दावा किसीने नहीं किया है। किसी के जैसा बनना है यह कस्तूरबा का आदर्श नहीं था। और इसीलिए मुख्यधारा में रहते हुए उन्होंने विशेष कार्य किया हो ऐसा शायद ही देखने को मिलता हो, फिर भी वे विशिष्ट और निराली थीं इसमें किसी से भी उनका स्थान निम्न नहीं था। कई बार कुछ लोग कहते है कि कस्तूरबा का ज्यादा कोई योगदान नहीं है। अरे भाई, उनका योगदान नहीं उनका समर्पण था और समर्पण योगदान से अधिक मूल्यवान होता है।

मोहनदास बारिस्टर की पढ़ाई कर कायदा स्नातक बने थे। बा ने पारंपरिक शिक्षा की कोई पदवी हासिल नहीं कि थी किंतु, गाँधीजी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली कस्तूरबा पारंपरिक शिक्षा के बगैर आश्रमी जीवन के आधार पर व्रत स्नातक बनी। 'हर सफल पुरुष के पीछे नारी का हाथ होता है' यह यथार्थता को सार्थक करती कस्तूरबा संयम निष्ठ जीवन और व्रत के मामले में वे गाँधीजी की भी शिक्षिका बन गई।

व्रत के संदर्भ में बात आती है तो उनके मूल में सत्य और अहिंसा है, पर बगैर अभय के सत्य का पालन नहीं हो सकता। कस्तूरबा सत्य के खातिर अपने आपको न्यौच्छावर करने के लिए दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में पदार्पण करती है, वे अकेली ही नहीं किंतु कई महिलाओं के लिए प्रेरणा स्थान भी बनती है, उनकी इस निष्ठा में अभय का दर्शन होता है। विनोबा जी की भाषा में कहे तो – मैं नहीं डरूंगा यहाँ तक ही केवल अभय नहीं है किंतु, मैं किसी को डराऊंगा भी नहीं। 'मैं ना डरूंगा और न किसी को डराऊंगा' इस शास्त्र में से सत्याग्रह का जन्म हुआ है। सत्याग्रह का सिद्धांत है कि जालिम अपने तन का या धन का मालिक हो सकता है पर मन का कभी नहीं।

सत्याग्रह की लडत की कठिनाइयों का सामना करना अत्यंत कठिन कार्य था उस दौरान जेल जाने व जेल में अपने प्राण त्याग ने की तैयारी में भी कस्तूरबा की निर्भयता का दर्शन होता है। रामधारी सिंह दिनकर की यह पंक्तियां मानों कस्तूरबा के बुलंद हौसले को दर्शाती हो ऐसा प्रतीत होता है।

सच है, विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं, काँटों में राह बनाते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में कस्तूरबा के द्वारा किए गए कार्यों के संदर्भ में फिरोजशाह मेहता कहते हैं कि इतिहास में कई विरांगनाओं के वीर कार्यों की प्रशंसा की होगी। पर मुझे लगता है कि श्रीमती गाँधी विश्व की सबसे बड़ी विरांगनाओ में स्थान प्राप्त करेगी। एक निरक्षर भारतीय नारी क्या परिवर्तन ला सकती है इसका उत्कृष्ट उदाहरण कस्तूरबा गाँधी है।

चेतावनी कहो या संदेश: गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष और वरिष्ठ गाँधीयन न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी से कुछ समय पहले मिला था। उन्होंने अत्यंत महत्वपूर्ण बात बताते हुए कहा कि हमारी स्थिति गाँधीजी के वकील बनने की नहीं होनी चाहिए, गाँधीजी के बारे में समझते हुए अपने आपको जानना है उनकी वकालत करना नहीं। धर्माधिकारी साहब ने वास्तविकता को प्रस्तुत किया था, आज के संदर्भ में देखते है तो उनका कथन सच दिखाई दे रहा है, कई लोग गाँधीजी की वकालत ही कर रहे है ऐसा तो नहीं ना? और होना भी नहीं चाहिए। कहीं पर भी हम गाँधीजी का पक्ष लेकर अपने आपको इतना प्रस्तुत करने का प्रयास करते है कि हमारी अभिव्यक्ति में आक्रोश का भाव दिखाई देता है।

देखा जाए तो गाँधीजी सरलता से अपने आपको और अपने विचार को प्रस्तुत करते थे, यहाँ तक की यह बात से वे खुद भी ताज्जुब थे की ईश्वर ने इतने महान प्रयोग करने के लिए उनका ही चयन क्यों किया होगा, वे कहते थे कि 'स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि ईश्वर को हिंदुस्तान के करोड़ो मूक, अज्ञान और गरीबों के लिए काम लेना था। और इसीलिए उन्होंने मुझ जैसे अपूर्ण व्यक्ति को पसंद किया होगा।' अपनी जैसी गलतियां करने वाले लोगों को यह यकीन हो जाए कि गलतियों को सुधारा जा सकता है। गलती करना गलती नहीं है किंतु उस गलती का बार-बार दोहराव करना सबसे बड़ी गलती है। इसीलिए हम सब यह कोशिश करें की गाँधीजी के माध्यम से अपने आपको समझे, जाने और पहचान ने की प्रक्रिया में आत्म निरीक्षण, आत्म परीक्षण और आत्म शोधन की ओर प्रयास करें।

गाँधीजी यह चर्चा का विषय नहीं है, नाहिं इनको शब्दों के माध्यम से तौल सकते है। यह एक व्यावहारिकता से जीने का विषय है। कोई लेख या कोई किताब आपको प्रभावित कर सकता है, पर प्रेरणा तो इसमें कुदने से ही मिलती है। उसमें भावविभोर होंगे तभी हम गाँधीजी के माध्यम से स्वयं को भी समझ सकेंगे। प्राचीन दर्शनशास्त्र कहता है अपने आपको समझो यानी कि आत्म निरीक्षण। और आधुनिक दर्शनशास्त्र कहता है अपने आपको सुधारो। देखा जाए तो अपने आपको समझो में से अपने आपको सुधारो तक पहुँचे है, बस फर्क इतना ही पड़ा है।

वैसे भी हमारी मानसिकता ऐसी हो गई है कि ऐतिहासिक व्यक्तियों पर किछड़ उछालने से हम नहीं डरते। सवाल तो तब बनता है जब हमने ठिक तरह से पढ़ा भी नहीं होता या समझा भी नहीं होता है ऐसे ऐतिहासिक पात्रों के बारे में अपनी राय देते है। सवाल तो यह है कि आज का युवाधन अपना ताल भूल गया है और दूसरे के ताल पर नाच रहा है। क्या ऐसा जीवन जी सकते है जिससे हमारे जीवन पर कोई कृति का निर्माण हो? या वह किसी के लिए आदर्श बने? सवाल गहरा है पर किछड़ उछालने से पहले थोडा सोचे, क्या मैं यह कह सकता हूँ कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है?

मैं क्षमा चाहता हूँ कि अन्य कारणों की वजह से जनवरी से मार्च का अंक हमारे पाठकों के लिए समय पर उपलब्ध नहीं कर पाए। इसलिए यह संयुक्तांक आपके सामने प्रस्तुत कर रहे है। इस संयुक्तांक में प्रो. सुदर्शन आयंगार द्वारा विशेष रुप से कस्तूरबा गाँधी पर तैयार की गई जीवन झांकी प्रस्तुत कर रहे है और यह 'खोज गाँधीजी की' के आनेवाले कुछ अंको में क्रमशः प्रस्तुत की जाएगी। इस प्रयास से हमारे कई पाठकों के सामने कस्तूरबा की बृहत जीवनी पहुँच पाएगी। साथ-साथ न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी का कस्तूरबा की कृतिशील गाथा को समर्पित विशेष लेख, संगीत व महात्मा गाँधी विषयक डॉ. गीता धरमपाल का लेख और फाउण्डेशन की गतिविधियां आपके साथ साझा कर रहे है।

हमेशा की तरह आप इस अंक का भी स्वीकार करें और आपके बहुमूल्य प्रतिभाव हमें जरूर भेजे।

धन्यवाद।

(अश्विन झाला)

महाप्रदर्शनी

*‘**खोज गाँधीजी की**’ के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे ‘सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा’ से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। विलायत के दौरान मोहनदास को तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए। उन अनुभव की गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।* – ***संपादक***

सन् १८९० में पेरिस में एक बड़ी प्रदर्शनी हुई थी। उसकी तैयारियों के बारे में मैं पढ़ता रहता था। पेरिस देखने की तीव्र इच्छा तो थी ही। मैंने सोचा कि यह प्रदर्शनी देखने जाऊँ, तो दोहरा लाभ होगा। प्रदर्शनी में एफिल टॉवर देखने का आकर्षण बहुत था। यह टॉवर सिर्फ लोहे का बना है। एक हजार फुट ऊँचा है। इसके बनने से पहले लोगों की यह कल्पना थी कि यह एक हजार फुट ऊँचा मकान खड़ा ही नहीं रह सकता। प्रदर्शनी में और भी बहुत कुछ देखने जैसा था।

मैंने पढ़ा था कि पेरिस में एक अन्नाहारवाला भोजन-गृह है। उसमें एक कमरा मैंने ठीक किया। गरीबी से यात्रा करके पेरिस पहुँचा। सात दिन रहा। देखने योग्य सब चीजें अधिकतर पैदल घूमकर ही देखीं। साथ में पेरिस की और उस प्रदर्शनी की ‘गाइड’ तथा नकशा ले लिया था। उसके सहारे रास्तों का पता लगाकर मुख्य-मुख्य चीजें देख लीं।

प्रदर्शनी की विशालता और विविधता के सिवा उसकी और कोई बात मुझे याद नहीं है। एफिल टॉवर पर तो दो-तीन बार चढ़ा था, इसलिए उसकी मुझे अच्छी तरह याद है। पहली मंजिल पर खाने-पीने का प्रबंध था। यह कह सकने के लिए कि इतनी ऊँची जगह पर भोजन किया था, मैंने साढ़े सात शिलिंग फूँककर वहाँ खाना खाया।

पेरिस के प्राचीन गिरजाघरों की याद बनी हुई है। उसकी भव्यता और उनके अंदर मिलनेवाली शांति भुलायी नहीं जा सकती। नोत्रदाम की कारीगरी और अंदर की चित्रकारी को मैं आज भी भूला नहीं हूँ। उस समय मन में यह खयाल आया था कि जिन्होंने लाखों रुपये खर्च करके ऐसे स्वर्गीय मंदिर बनवाये हैं, उनके दिल की गहराई में ईश्वर - प्रेम तो रहा ही होगा।

पेरिस की फैशन, पेरिस के स्वेच्छाचार और उसके भोग-विलास के विषय में मैंने काफी पढ़ा था। उसके प्रमाण गली-गली में देखने को मिलते थे। पर ये गिरिजाघर उन भोग-विलासों से बिलकुल अलग दिखायी पड़ते थे। गिरजों में घुसते ही बाहर की अशांति भूल जाती है। लोगों का व्यवहार बदल जाता है। लोग अदब से पेश आते हैं। वहाँ कोलाहल नहीं होता। कुमारी मरियम की मूर्ति के सम्मुख कोई-न-कोई प्रार्थना करता ही रहता है। यह सब वहम नहीं हैं, बल्कि हृदय की भावना है, ऐसा प्रभाव उस समय मुझ पर पड़ा था और वह बढ़ता ही गया है। कुमारिका की मूर्ति के सम्मुख घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करनेवाले उपासक संगमरमर के पत्थर को नहीं पूजते थे, बल्कि उसमें मानी हुई अपनी कल्पित शक्ति को पूजते थे। ऐसा करके वे ईश्वर की महिमा को घटाते नहीं बल्कि बढ़ाते थे, यह प्रभाव मेरे मन पर उस समय पड़ा था, जिसकी धुँधली याद मुझे आज भी है।

एफिल टॉवर के बारे में दो शब्द कहना आवश्यक है। मैं नहीं जानता कि आज एफिल टॉवर का क्या उपयोग हो रहा है। प्रदर्शनी में जाने के बाद प्रदर्शनी संबंधी बातें तो पढ़ने में आती ही थीं। उसमें उसकी स्तुति भी पढ़ी और निन्दा भी। मुझे याद है कि निन्दा करनेवालों में टॉल्स्टॉय मुख्य थे। उन्होंने लिखा था कि एफिल टॉवर मनुष्य की मूर्खता का चिह्न है, उसके ज्ञान का परिणाम नहीं। अपने लेख में उन्होंने बताया था कि दुनिया में प्रचलित कई तरह के नशों में तम्बाकू का व्यसन एक प्रकार से सबसे ज्यादा खराब है। कुकर्म करने की जो हिम्मत मनुष्य में शराब पीने से नहीं आती, वह बीड़ी पीने से आती है। शराब पीनेवाला पागल हो जाता है, जब कि बीड़ी पीनेवाले की अक्ल पर धुँआ छा जाता है, और इस कारण वह हवाई किले बनाने लगता है। टॉल्स्टॉय ने अपनी सम्मति प्रकट की थी कि एफिल टॉवर ऐसे ही व्यसन का परिणाम है।

एफिल टॉवर में सौन्दर्य तो कुछ है ही नहीं। ऐसा नहीं कह सकते कि उसके कारण प्रदर्शनी की शोभा में कोई वृद्धि हुई। एक नई चीज है, बड़ी चीज है, इसलिए हजारों लोग उसे देखने के लिए उस पर चढ़े। यह टॉवर प्रदर्शनी का एक खिलौना था और जब तक हम मोहवश हैं तब तक हम भी बालक हैं, यह चीज इस टॉवर द्वारा भलीभाँति सिद्ध होती है। मानना चाहें तो इतनी उपयोगिता उसकी मानी जा सकती है।

–‘सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा’ से साभार, पृष्ठ क्र.७०–७२

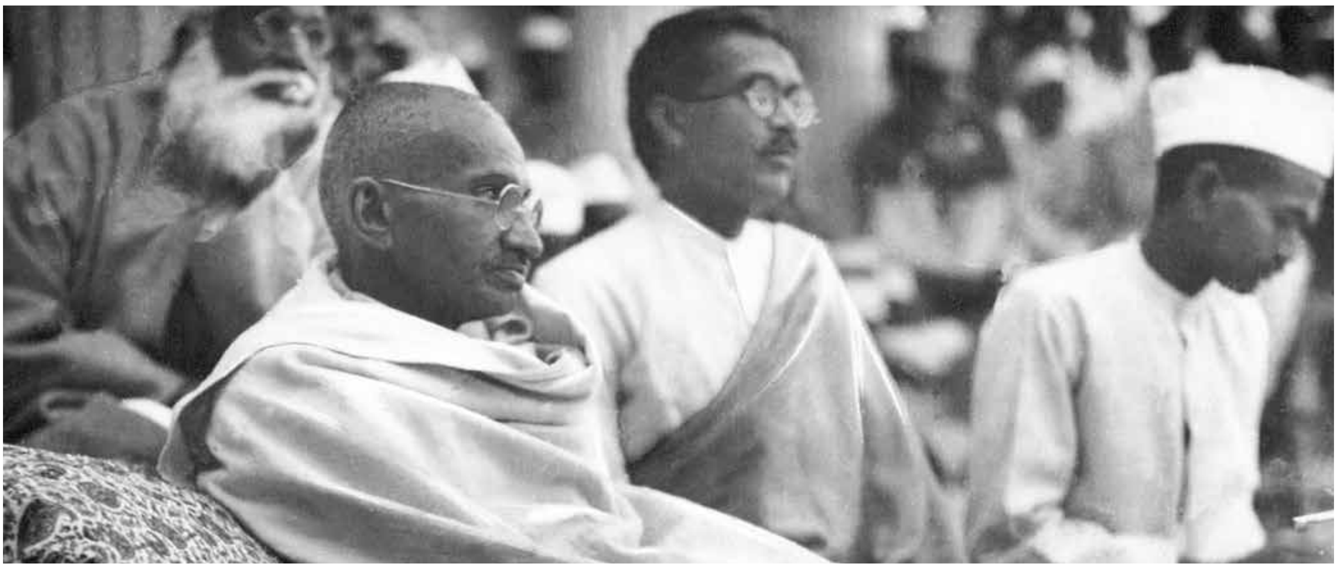

महात्मा गाँधी

कस्तूरबा जीवन-झांकी: समय के दायरे में

भूमिका: बा की जीवन-झांकी तैयार करने का आशय बा के जीवन को समय के घेरे में देखना है। यह कार्य कठिन सिद्ध हुआ है। बा के जीवनकाल का कोई व्यवस्थित क्रम उपलब्ध नहीं है अतः गाँधीजी के जीवन को कालक्रम में रखने के जो प्रयास हुए हैं उन्हीं को आधार बना कर बा के जीवन का कालक्रम बनाने की कोशिश हुई है। 'गाँधीजी की दिनवारी' गाँधीजी के जीवन को कालक्रम में बद्ध करने का पहला महाप्रयास श्री चंदुलाल दलाल ने किया। उन्होंने बहुत सारे स्रोतों को खंगाल कर यह कार्य किया जो दो खंडो में क्रमशः १९७०, और १९७६ में प्रकाशित हुआ है। ध्यान योग्य हकीकत यह है कि पहला प्रकाशन १९१५ से १९४८ के समय के लिए है और दूसरा प्रकाशन १८६९ से १९१४ तक के समय का है। यानि की गाँधीजी के जीवन के पहले ४५ साल की दिनवारी बाद में तैयार हुई। दूसरा प्रयास श्री के.पी. गोस्वामी ने किया और वह १९७१ में छपी। यह कार्य अंग्रेजी में हुआ और यह दिनवारी (Chronology) शीर्षक से क्लेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी के हर संपुट में दी गई है। गोस्वामी द्वारा संकलित क्रम का शीर्षक है Mahatma Gandhi A Chronology।

बा के जीवन पर गहरा अभ्यास कर उनकी जीवनी (Kasturba A Life) लिखने का एक अनूठा प्रयास उनके एक पौत्र अरूण गाँधी (गाँधीजी-कस्तूरबा के दूसरे पुत्र मणीलाल के पुत्र) ने किया; और दुनिया को बा पर एक आधिकारिक जीवनी मिली। उपरोक्त तीनों स्रोतों का उपयोग कर हमने बा की दिनवारी को हिंदी में लोगों के बीच रखने का एक प्रयास किया है। बा-बापु १५० के अवसर पर यह हो रहा है इसका विशेष आनंद है। ***- संकलन कर्ता***

१८६९ – अप्रैल माह में गोकलदास मकनजी कापडिया के घर पोरबंदर में जन्म। माता का नाम व्रजकुँवरबा। जन्म तारीख या तिथि के बारे में विशेष जानकारी नहीं है। अप्रैल माह अनुमानित है।

१८७६ – कस्तूर और मोहन की सगाई।

१८८१ – मई माह में तेरह बरस की उम्र में कस्तूर और मोहन का विवाह हुआ।

१८८५ – २० नवंबर के दिन कस्तूर ने बालक को जन्म दिया जो तीन-चार दिन में मर गया।

१८८८ – जीवित रहे बालकों में पहले बालक हरिलाल का जन्म सितंबर १८८८ में। मोहन के विलायत जाने से पहले।

१८९१ – जुलाई मध्य से नवंबर के आरंभ तक बॅरिस्टर पति मोहनदास के साथ गृहस्थी।

१८९२ – मुंबई (तत्कालीन बंबई) और राजकोट में गृहस्थी जारी; २८, अक्तूबर के दिन दूसरे पुत्र मणिलाल का जन्म। गाँधीजी का दक्षिण अफ्रीका जाने का फैसला और अप्रैल के तीसरे सप्ताह में कस्तूर ने अपने दो छोटे बच्चों को साथ रखकर गाँधीजी को दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए मुंबई रवाना होते समय विदाई दी।

अप्रैल १८९३ से नवंबर १८९६ – कस्तूरबाई अपने दो बेटों की परवरिश करते हुए राजकोट में गाँधीजी के भाईओं के परिवार के साथ रही और छोटी बहू होने के नाते घर की जवाबदारियां निभाई। जून १८९६ में गाँधीजी हिंदुस्तान आए और ७ जुलाई को राजकोट अपने घर पहुँचे। तब से ३० नवंबर १८९६ तक कस्तूरबाई फिर गाँधीजी के साथ रहीं। नवंबर ३० को पति दो पुत्र हरिलाल, मणिलाल और गाँधीजी की बडी बहन रळियात बहन के पुत्र गोकळदास के साथ कस्तूरबाई पति के संग दक्षिण अफ्रीका जाने के लिए मुंबई से निकलीं। यह परिवार 'कुर्लेन्ड' नामक जहाज में डर्बन जाने के लिए सवार हुआ था।

कस्तूरबा व महात्मा गाँधी

१८९७ – जनवरी १३ को १९ दिन समुद्र यात्रा में और २५ दिन डर्बन बंदरगाह से थोडी दूरी पर कोरांटीन में रहने के बाद कस्तूरबाई तीन बालकों के साथ डरबन बंदरगाह पर उतरी और परिस्थितिवश अपने घर न जाकर गाँधीजी के मित्र पारसी रुस्तमजी के घर पहुँची। गाँधीजी पर जमा भीड द्वारा हमले का अंदेशा था जो हुआ। दो दिन बाद कस्तूरबाई अपने पति के घर बीच ग्रोव विला पहुँची और गृहस्थी बसाई। ४ मई, १८९७ को तीसरे बालक रामदास को जन्म दिया। बा की तबीयत भी थोडी खराब हुई। जच्चा-बच्चा और तीन बडे बालकों का ध्यान गाँधीजी ने ही रखा।

१८९८ – १८९९ के आरंभ के महीने में ही गाँधीजी और बा के बीच तीव्र घर्षण हुआ। दोनों ही अभी मात्र २९ साल के ही थे। पंचम जाति के मेहमान के रात के पेशाब के बर्तन को खाली करने में बा को हिचकिचाहट हो रही थी और गाँधीजी का आग्रह था कि काम हो और खुशी-खुशी किया जाय। बा भी क्रोधित हुई और गाँधीजी का पारा तो आसमान पर चढा था। बा का हाथ खींच कर दरवाजे तक ले गए और कहा, 'अभी निकल जा इस घर से'। बा ने रोते हुए कहा, 'इस विदेश में मैं कहाँ जाऊंगी, शर्म करो, अंदर चलो और दरवाजा बंद करो'। गाँधीजी को शर्म आई और अपने क्रोध पर बाद में बहुत पछतावा किया। गाँधीजी सार्वजनिक जीवन में डूबे हुए थे और बा ने गृहस्थी अच्छे से संभाल ली थी और एक बडे परिवार का सुचारू रुप से वे संचालन कर रहीं थीं।

१९०० – २३ मई, १९०० के दिन बा ने चौथे बालक पुत्र देवदास को जन्म दिया। प्रसवपीडा अचानक हुई और डॉक्टर को बुलाने का वक़्त ही नहीं रहा। गाँधीजी ने ही प्रसव करवाया और यह कठिन प्रसव था, फिर एक बार जच्चा-बच्चा और बालकों की देखभाल गाँधीजी ने ही की।

१९०१ – अक्तूबर के महीने में गाँधी परिवार ने दक्षिण अफ्रीका से वापस अपने वतन हिंदुस्तान जाने का निश्चय किया। इस अवसर पर कई विदाई के समारंभ हुए जिनमें बा और गाँधीजी को ढेरों उपहार मिले। गाँधीजी कृतिश्चयी थे कि सारी भेंट व उपहार उन्हें सामाजिक कार्यो के एवज में मिले थी इसलिए उनका निजी उपयोग नहीं हो सकता। बा भी इस विचार पर दृढ थीं कि उन्हें मिले उपहार निजी थे परंतु गाँधीजी के हठाग्रह पर बा ने उन भेंट-सौगादों का उपयोग गाँधीजी की इख़्तियार पर छोड दिया। परिवार दिसंबर १९०१ को हिंदुस्तान आ गया। बा गाँधीजी और बच्चों समेत राजकोट अपने ससुराल पहुँच गई।

१९०२ – जुलाई १९०२ तक बा बच्चों सहित राजकोट ही रही। अगस्त में बा और गाँधीजी अपने तीन बच्चों को लेकर मुंबई आ बसे। जान पडता है कि बड़े बेटे हरिलाल राजकोट में ही रुके। नवंबर महीने में गाँधीजी को फिर दक्षिण अफ्रीका से बुलावा आ गया, उनका अनुमान था कि वह जलदी ही लौट आएंगे। इसलिए उन्होंने बा और बच्चों को मुंबई में ही रहने का सुझाव दिया। अपने भतीजे छगनलाल को पत्नी व बालक सहित बा के साथ रहने का इंतज़ाम भी कर दिया। बा इस बडे परिवार के साथ के मुखिया के तौर पर रहीं।

१९०३ – अधिकांश समय बा बच्चों और छगनलाल के परिवार सहित मुंबई में ही रहीं। इस दौरान गाँधीजी के बडे भाई लक्ष्मीदास ने पहल की और बा की संमति से बडे पुत्र हरिलाल की सगाई राजकोट के ही वोरा परिवार की बेटी गुलाब (चंची) से कर दी। अरुण गाँधी इस सगाई का समय जनवरी १९०३ बताते हैं जब कि चंदुलाल दलाल गाँधीजी की दिनवारी में यह समय नवंबर बताते हैं और पाद टिप्पणी में लिखते हैं कि उस समय हरिलाल हिंदुस्तान में थे। इससे यह इंगित होता है कि बा अपने अन्य बच्चों के साथ ट्रान्स्वाल चली गई थी जहाँ गाँधीजी ने नए सिरे से वकालत शुरू कर दी थी।

१९०४ से १९१४ दक्षिण अफ्रीका में १९०४ के अंत तक बा अपने बच्चों सहित जोहानिसबर्ग पहुँची ऐसा ज्ञात होता है। बडे बेटे हरिलाल पढाई के लिए हिंदुस्तान ही रुक गए थे। तीसरे पुत्र रामदास का हाथ जहाज में कप्तान के साथ खेलते हुए टूटा था। गाँधीजी ने हड्डी मिट्टी के उपचार से जोडी। जोहानिसबर्ग में गृहस्थी बसी और बा अपने तीन पुत्रों तथा और गाँधीजी के सहयोगियों के साथ रहीं। इसी साल भारतीय बस्ती में प्लेग की महामारी फैल गई। गाँधीजी के साथ बा भी अन्य भारतीय महिलाओं के साथ बीमारों की सेवा में जुट गई। यह बा का नया स्वरूप था। बा ने भी अपनी स्वतंत्र समझ से भारतीय समुदाय को अपना बृहद परिवार माना। इसी अरसे में गाँधीजी के युवा मित्र पोलक गाँधी कुटुंब के साथ रहने आए और जल्दी ही उनकी नवविवाहिता पत्नी मिलि भी आ मिली। १९०६ के मध्य तक बा ने जोहानिसबर्ग के घर में ही गृहस्थी मुखिया के तौर पर चलाई ऐसा विभिन्न स्रोतो को देखने से लगता है।

१९०६ – सी. बी. दलाल की दिनवारी के अनुसार १९०४ के जून महीने में गाँधीजी के जीवन में एक क्रांति आई। गाँधीजी ने जोहानिसबर्ग से डर्बन तक की ट्रेन की रात्रि की मुसाफरी में जॉन रस्किन की 'अन टु दिस लास्ट' पढी और उसका इतना गहरा असर हुआ कि डर्बन से १८ मील की दूरी पर ज़मीन खरीदी और पूरा परिवार (जिसमें इंडियन ओपिनियन का परिवार भी शामिल था) वहाँ जाकर बसा। वही फिनिक्स आश्रम कहलाया। बा और जोहानिसबर्ग का गाँधीजी का बडा परिवार १९०६ के बीच फिनिक्स आश्रम जाकर बसा ऐसा पता चलता है। बडे बेटे हरिलाल का ब्याह गाँधीजी के बडे भाई लक्ष्मीदास ने हिंदुस्तान में करवा दिया इसको लेकर गाँधीजी गुस्से में आए परंतु बा को इसमें परिवार के बुजुर्गों की बुद्धिमानी दिखी।

गाँधीजी जुलू प्रजा के बलवे में घायलों की सेवा से लौटे और बा से कहा कि अब वे आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लें, बा के लिए इस मुद्दे पर कोई आपत्ति नहीं थी उन्होंने इसे सहज स्वीकार किया। यह बात जुलाई १९०६ के अरसे में हुई ऐसा जान पडता है।

१९०७ – के शुरुआत के महीनों में बेटा हरिलाल और बहू गुलाब बा के आग्रह पर फिनिक्स पहुँच गये और बा परिवार में व्यस्त हुईं।

१९०८ – अरूण गाँधी के लिखे ब्योरे से पता चलता है कि जनवरी १०–१९०८ को फिनिक्स के गाँधी परिवार में खुशीयां मनाई जा रही थी, गुलाब गर्भ के सातवें महीनें में प्रवेश कर चुकी थी। बा व गाँधीजी के दादी व दादा बनने का मौका पास आ रहा था। उसी दिन जोहानिसबर्ग से तार पहुँचा कि गाँधीजी गिरिफ्तार हुए हैं। बा ने सभी को खाना खिलाकर अपनी थाली परोसी ही थी। वे थाली पर से सहज उठ गई, विशाद नहीं था पर गाँधीजी अगर जेल में पहुँचे हों उनसे मिष्टान्न नहीं खाया गया। बा ने संकल्प किया कि जब तक गाँधीजी जेल से छूट कर नहीं आते वे एकदम सादा भोजन ही लेंगी। गाँधीजी के निर्णय से और कार्य से बा एकदम से सहमत थी और आश्रमी जीवन का अहसास गहराया और वे एक तरह से आश्रम की बा बनी और दृढता और मृदुता से आश्रमवासियों को सभी काम में निर्देश देने लगी। बा के जीवन में यह एक महत्वपूर्ण मोड था। उनका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व खिल चुका था।

गाँधीजी और उनके सहयोगी सज़ा खत्म होने से पहले ही छूट गए। वे अभी आश्रम में लौटे नहीं थे। आश्रम में बडा खाना तो बना पर बा दौडी–दौडी गाँधीजी के पास नहीं पहुँची। दस ही दिन में बुरी खबर आई कि मीर आलम नाम के एक पठान ने अपने कुछ साथियों के साथ गाँधीजी पर हमला बोला और उन्हें घायल किया। पत्नी बा का दिल तो दौड कर जाने को हुआ परंतु आश्रम की माली हालत को मद्दे नज़र रखकर और अपने कर्त्तव्य को समझते हुए बा जोहानिसबर्ग नहीं गई।

अप्रैल १० को हरिलाल और गुलाब को एक बिटिया हुई जिसका नाम रामी रखा गया। फिनिक्स के आश्रम परिवार में खुशियां मनाई गई। जुलाई में बेटे हरिलाल को पहली बार सत्याग्रह करते हुए सात दिन की सज़ा हुई। बा और गाँधीजी का लोगों ने अभिनंदन किया।

अगस्त महीने से ही बा की मासिक संबंधी समस्या शुरू हुई और वे बीमार रहने लगी। नवंबर में उनकी हालत इतनी बिगडी की उनके फिनिक्स के लंबे समय के सहयोगी और इंडियन ओपिनियन के संचालक अल्बर्ट वेस्ट ने गाँधीजी को तार से बा की गंभीर हालत के बारे में बताया। गाँधीजी पहुँच नही पाए। वे वॉकस्रस्ट की जेल में थे। उन्होंने वहीं से बडा ही मार्मिक पत्र लिखा। बा की हालत कुछ सुधरी। गाँधीजी जब फिनिक्स आए तो उन्होंने बा को बहुत ही कमज़ोर पाया।

१९०९ – जनवरी महीने में बा को डर्बन में गाँधीजी के मित्र पारसी डॉक्टर नानजी ने जांचा और कहा कि सर्जरी करनी होगी। बा पर सर्जरी की गई और गाँधीजी को आशवस्त किया गया कि वे स्वस्थ हो जाएंगी और गाँधीजी अपनी मुहिम पर निकल गए। पर ऐसा हुआ नहीं और बा की तबीयत बहुत नाज़ुक हो गई। गाँधीजी को तार दे कर बुलाया गया। डॉ. नानजी ने गाँधीजी से कहा कि बा को गो– मांस का शोरबा देना होगा नहीं तो वे बच नहीं पाएगी। गाँधीजी ने कहा बा से पूछा जाय। बा ने कहा मेरी मौत लिखी होगी तो वो ही सही पर वे इस पाप में नहीं पडना चाहती। गाँधीजी ने तय किया कि बा को फिनिक्स आश्रम ले जाया जाय। डॉ. नानजी बहुत नाराज़ हुए और कहा कि आप उसे मार ही डालना चाहते हैं तो ले जाईए मैं इजाज़त नहीं देता। बा ने गजब की हिम्मत दिखाई और फिनिक्स पहुँची भी और स्वस्थ भी हो गई। इसी बरस गाँधीजी हाजी हबीब के संग इंग्लेंड गए और एँशियायियों का केस रखा पर सफलता नहीं मिली; लौटते वक्त किल्डोनन कैसल नामक जहाज पर हिन्द स्वराज की रचना की।

क्रमश: – संकलनः सुदर्शन आयंगार

(संकलन कर्ता गुजरात विद्यापीठ के पूर्व कुलनायक और फिलहाल गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव के संचालक मंडल के सदस्य हैं।)

बा: कस्तूरी-सुगंध

कस्तूरबा आश्रम में और सत्याग्रह में सबकी 'बा' बन गई थी। अपने जीवन के महत्वपूर्ण काल उन्होंने इसी में बिताया है, आश्रम में रहकर परदे के पीछे की भूमिका बा निबाती रही। हरमन कालनबॅक के शब्दों में कहे तो 'कस्तूरबा ने अपने स्थान को प्रतिभा तथा मान से सुशोभित किया।' 'बा' के जीवन के रचनात्मक पहलू को दर्शाता हुआ न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी का 'बाः कस्तूरी-सुगंध' लेख पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे है। **– संपादक**

२२ फरवरी का दिन कस्तूरबा की पुण्यतिथि। 'बा' बापूजी से लगभग छह माह उम्र में बड़ी थी। २२ फरवरी, १९४४ को आगाखाँ पैलेस (महल) में कारावास में 'बा' का देहावसान हो गया। १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में ही कस्तूरबा को शहादत प्राप्त हुई। कस्तूरबा की समाधि पर स्वयं महात्मा गाँधीजी ने छोटे-छोटे शंखों से 'हे राम' शब्द अंकित किया था। 'करेंगे या मरेंगे' यह भारत छोड़ो आंदोलन का घोषवाक्य 'बा' ने सत्य साबित कर दिया। महादेवभाई देसाई की समाधि पर 'क्रॉस', तो उनकी समाधि पर 'स्वस्तिक' चिह्न बनवाने का निश्चय भी हो गया था। इसमें मृतक की पूजा की भावना नहीं थी, बल्कि उनके गुणों का स्मरण होता रहे और गुणों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जाए, इतनी ही नम्र भूमिका थी। इससे उनके गुणों का अनुसरण करने की प्रेरणा मिलेगी यह भावना थी।

'बा' के कारावास का सुंदर वर्णन डॉ. सुश्री सुशीला नायर ने किया है। 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय गाँधीजी के गिरफ्तार होने पर 'बा' उनके साथ जाना चाहती थी। तब गाँधीजी ने कहा कि 'मेरे साथ आने के बदले मेरे द्वारा अंगीकृत काम को आगे चलाओ।' अत: 'बा' ने बापू का काम आगे चलाने का तय किया। बापू शिवाजी पार्क में भाषण करनेवाले थे, इसलिए 'बा' ने जाहिर किया कि वे अब शिवाजी पार्क में भाषण देगी। हम पकड़े जाएँगे इसकी कल्पना होने से कस्तूरबा ने एक संदेश लिखकर रखा, ''महात्माजी ने आप लोगों को बहुत कुछ कहा है। कल ढाई घंटे ए.आइ.सी.सी. की बैठक में उन्होंने अपना मनोगत व्यक्त किया है। अब इससे अधिक कहने को क्या बचा है? अब तो उनकी सूचना पर अमल करना है। बहनों को अपना तेज दिखाने का सुअवसर है। सभी धर्म और जाति की बहनों को एकत्रित होकर यह लड़ाई सफल करके दिखानी है। सत्य और अहिंसा का मार्ग न छोड़ें।'' शिवाजी पार्क तक पहुँचने के पहले ही 'बा' को पकड़ लिया गया। गिरफ्तारी के समय प्रत्येक सैनिक अपने कपड़े पर 'करेंगे या मरेंगे' लिखा हुआ बिल्ला सी ले, यह तय था। 'बा' को यह सुझाया गया, तब उन्होंने कहा, 'मुझे इसकी क्या जरूरत है?' वह तो उनके कलेजे पर ही उत्कीर्ण था।

पत्नी को अपने हृदय की गृहस्थी की सम्राज्ञी बनाने के स्थान पर पुरुष ने उसे क्रय-विक्रय की वस्तु बना दिया है। अंग्रेजी साहित्य पढ़कर पुरुष वर्ग ने यही पाठ पढ़ा है क्या? स्त्री-पुरुष की अर्धांग-उत्तमांग है, ऐसा वर्णन किया जाता है। लेकिन पुरुषों ने स्त्रियों को गुलामी की स्थिति में पहुँचा दिया है। परिणामत: हमारा देश पक्षाघात से पीड़ित होने की हालत में है। यह गाँधीजी ने कहा था। हमने मूर्खतावश स्त्रियों को सती होना सिखाया। वह व्यक्तिपूजा की पराकाष्ठा है। पर पत्नी धर्म तो यह है कि वह पति के कार्य को स्वयं ही अमर करे। गाँधीजी के इस संदेश को कस्तूरबा ने जीवन में उतार लिया। विशुद्ध जीवन जीने के मेरे प्रयत्न में कस्तूरबा ने कभी मुझे रोका नहीं। इस कारण यदि हमारी बुद्धि-शक्ति में काफी अंतर हो, तो भी हमारा जीवन संतोषी, सुखी और हम दोनों के लिए उन्नत करनेवाला रहा है। यह मेरा मत है। मुझे जन्म-जन्मांतर तक सहचारिणी का चयन करना

कस्तूरबा गाँधी

पड़ा, तो मैं 'बा' को ही पसंद करुंगा। निष्कपट, श्रद्धा, नि:स्वार्थ भक्ति और सेवा का आदर्श जैसा बा में दिखता था, वैसा मुझे अन्यत्र कहीं भी नहीं दिखा। हमारे विवाह से ही मेरे जीवन-संग्राम में वह अचल निष्ठा से मेरे साथ खड़ी रही। वह अपने तन-मन-वचन से मेरे जीवन-कार्य को अर्पित थी, वह भी इतनी पूर्णता से कि उसकी मिसाल नहीं। निदान मेरी पत्नी ही अहिंसाशास्त्र की मेरी गुरु बनी। यह स्वयं गाँधीजी ने लिख रखा है।

बापू अपनी पत्नी को 'बा' कहते थे और कस्तूरबा गाँधीजी को 'बापू' कहती थीं। यह शुद्ध अनाचार है, ऐसा कहनेवाले बुद्धिमान आज भी हैं। गुजराती में 'बा' यानी माँ और 'बापू' यानी 'पिता' होता है। पति पत्नी को 'माँ' कहे और पत्नी पति को पिता कहे, यह उन बौद्धिकों के मतानुसार शुद्ध अनाचार है। गाँधीजी का आश्रम था, चार दिवारों का परिवार नहीं था। जैसे कम्युनिस्टों के कम्यून में माँ, पिता, पति, पत्नी, पुत्र, भाई, बहन सभी कामरेड होते हैं, वैसे ही गाँधीजी के आश्रम में कौटुम्बिकता थी, तो भी कौटुम्बिक नाते नहीं थे। अत: सभी माताएँ और सभी पिता थे। अपने पुत्र की माँ कहकर अपनी पत्नी की ओर देखने की दृष्टि सबसे उदात्त और सुसंस्कृत मानी जाती है। इसलिए 'मातृत्वभावना' कौटुम्बिक भावना का परम उदात्त शिखर है। पार्वती और परमेश्वर अर्थात माता और पिता का उल्लेख कालिदास ने 'पितरौ' इस एक ही पद से किया है। ऐसा वह कभी 'मातरौ' पद से भी होगा। इसमें द्विवचन है, तो भी भावना एकत्व की है, ऐसा दादा धर्माधिकारी ने 'बा' यह पद उदात्त और मूलभूत संकेत कैसे है, यह बता दिया है। परंतु नर-मादा के सिवा जिन्हें स्त्री-पुरुष की ओर देखना ही नहीं आता, वे इसे कभी समझ ही नहीं सकेंगे।

'बा' बापू की सहधर्मचारिणी थी, अनुयायिनी नहीं थी। पतिनिष्ठा से महात्माजी के विचारों के प्रति उसकी निष्ठा अधिक थी। बापू ने कभी-कभी 'बा' के साथ पति जैसे बरताव किया, फिर भी 'बा' की निष्ठा कायम रही, क्योंकि वे विचारों से उनसे एकरूप हो गई थी। पुत्र हरिलाल भाई के विषय में भी पुत्र की अपेक्षा तथ्यों पर 'बा' अटल रहीं। यह सब अग्निदिव्य था, पर उसमें से कस्तूरबा तपकर बाहर निकलीं। इसी कारण वे सबकी 'बा' थीं। मातृहृदयी साने गुरुजी की भाषा में ''बा बापू नवभारत के दोनों माँ-बाप थे। कस्तूरी की तरह उनका जीवन सुगंधित था। हे माँ, तेरा उस बंदीगृह में मरण हम कैसे भूलें? वह पुण्य समाधि भारत का तीर्थक्षेत्र है। बा-बापू का जीवन राष्ट्र की अमर पुण्य पूँजी है, निधी है!'' साने गुरुजी के इन शब्दों में 'बा' का पुण्य जीवन समाहित है। यह पुण्य पूँजी ही खरी-सच्ची सम्पत्ति है, निधि है। वह सदैव वृद्धि को प्राप्त होती रहे, यही अपेक्षा है।

– 'स्त्री-शक्ति विमर्श' से साभार, पृष्ठ क्र.८५-८७

GANDHI AND MUSIC

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के साथ पिछले छह साल से जुड़े जर्मनी के हैडलबर्ग यूनिवर्सिटी की प्रो. गीता धरमपाल, फरवरी-मार्च २०१८ में कुछ दिनों के लिए गाँधी तीर्थ पर थी। २७ फरवरी २०१८ को जलगाँव स्थित गाँधी उद्यान में 'म्यूझिक फॉर पीस' कार्यक्रम की प्रस्तावना में आपने 'गाँधीजी व संगीत' पर अपनी बात प्रस्तुत की। ऐसे कई प्रामाणिक संदर्भों के आधार पर रखी गई बात को लेख के रूप में हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे है। **– संपादक**

We all know Mahatma Gandhi as the Prophet par excellence of Non-violence and Peace. Yet very few people know that Music was very close to his heart. Someone once asked Gandhi, "Mahatmaji, don't you have any liking for music?" Gandhi, without a second's hesitation, replied, "If there was no music and no laughter in me, I would have died of this crushing burden of my work."

Yet, for Gandhi, music wasn't just produced by instruments and by the human throat: for him, there existed a music of the mind, of the senses and a music of the heart.

To the music teacher in the Satyagraha Ashram, Sabarmati (Pandit Narayan Moreshwar Khare), he confided in a letter dated Oct. 7th 1924: "I have come to look upon music as a means of spiritual development. I cannot describe the joy I feel when listening to Bhajans."

And it was this deep connection between music and spirituality, exemplified by Gandhi, that attracted Mirabehn, his closest British disciple, who, as a lover of Beethoven's spiritual music, found in Gandhi, her Guru, the spiritual sustenance she was seeking.

To Gandhi's understanding, music was simultaneously "a constructive activity, which uplifts the soul" – in 1926 (on 15th April, to be precise), to an audience in Ahmedabad, he spelt this out more clearly: "if we mean by music - union, concord, mutual help, it may be said that in no department of life, can we dispense with it [i.e. music]. So if many more people send their children to music classes, it will be part of their contribution to national uplift." This would equally well apply to our contemporary scenario – which is much in need of peace and of finding peaceful solutions, something that could be achieved through musical instruction, or through participating in musical events like tonight's concert.

According to the Mahatma: "in true music, there is no place for communal differences and hostility" - so true: for musical venues, held during the Independence movement, were ideal examples of national integration, with Hindu and Muslim musicians, in synergetic union, producing divine music.

Gandhi, in search of truth, also underscored this with regard to music: "True music is created only when life is attuned to a single tune and a single time beat. Music is born only where the strings of the heart are not out of tune."

Figuratively transposing music into the political arena, he stated that "the experiment with music" would be successful only when crores of people in the entire country would start speaking with the same voice; "music" he emphasized, "must get a place in our efforts at popular awakening." Most insightfully, he defined "music as a sacred and powerful ancient art which has the capacity to change and control emotions."

Needless to say, as underscored by Dr. Namrata Mishra (Prof. of Vocal Music, Mathura College), Mahatma Gandhi's favourite ragas were Satya and Ahimsa, metaphorically speaking. The 'Thaats' he used were Swadeshi and Khadi. His Vadi and Samvadi Swaras were Brahmacharya and Aparigraha. Conversely, Asatya and Himsa were Varjit Swaras, notes to be avoided. Musically inclined as he was, he never missed his Riyaz with the Charkha. For him, 'true' music was integral to the 'threads of Khadi' and the 'spinning of the Charkha'.

At his Sabarmati Ashram he hosted prominent classical Indian musicians, such as Pandit N. M. Khare, Mama Fadke, Sri Vinoba and Balkoba Bhave. The life he lived was defined by rhythm and harmony, accentuated by melodious Bhajans in the Ashram's morning and evening prayers.

In one of his conversations with the Congress youth, Gandhi said -" our whole life should be sweet and musical like a song. [...] To make life musical means to make it one with God, to merge it in Him. He who has not rid himself of Raga and Dwesha, that is, likes and dislikes, who has not tasted of the joy of service, cannot have any understanding of celestial music. A study of music, which does not take account of this deeper aspect of this divine art, has little or no value for me". (Navajivan, 01.07.1928)

Gandhi lived and died for peace and harmony in the world: two goals that he firmly believed could be inspired and strengthened by music. And so it was most appropriate that the 100th centenary of his birth was celebrated by Ravi Shankar with a sitar recital in October 1969 in the Royal Albert Hall, a 'music for peace' concert which represented one of the first prominent Indian musical events in Europe.

In our present cataclysmic era, when the Gandhian way appears to be the only way for human survival and development, Gandhi's appreciation of music, as being conducive towards peace, provides us with an indispensable foundational stone for building the edifice of human friendship and reconciliation, in India and globally. This fact is affirmed by a famous Indian conductor, Zubin Mehta who proclaims: "Music is the message of peace, and music only brings peace".

- Prof. Gita Dharampal, Heidelberg, Germany

सार्वजनिक जीवन में

दक्षिण अफ्रीका में जेल जाने के सिवा बा वहाँ के सार्वजनिक कामों में शरीक हुई हों, सो मालूम नहीं होता। लेकिन हिंदुस्तान में आने के बाद बापूजी ने जितने भी काम उठाए, उन सबमें बा ने एक अनुभवी सैनिक की अदा से हाथ बटाया है। बा को आम सभाओं, जुलूसों और इस तरह के दिखावों का बिलकुल ही शौक नहीं था। लेकिन जहाँ रचनात्मक काम करना होता, अपनी हाजिरी और हमदर्दी से लोगों में हिम्मत और हूँफ (गरमी) भरनी होती, वहाँ वैसे कामों के लिए बा तैयार रही हैं। बापू ने हिंदुस्तान आने पर सत्याग्रह की पहली लड़ाई चंपारन में छेड़ी। कहा जा सकता है कि उसमें सविनयभंग करने के साथ ही फतह मिली। लेकिन बापूजी ने महसूस किया कि चंपारन में ठीक से काम करना हो, तो कुछ सेवकों को देहात में लोगों के बीच जाकर बैठना चाहिए और सुख-दुःख में उनके भागीदार बनकर उन्हें तैयार करना चाहिए। बिहार जैसे गरीब सूबे में तनख्वाह लेकर काम करनेवाले सेवक पुसा ही नहीं सकते। और जैसे-तैसे सेवकों से काम नहीं चल सकता। गाँववालों के पास पैसे तो नहीं थे, लेकिन जिस गाँव में लोग रहने के लिए मकान और कच्चा अनाज देना मंजूर करें, वहाँ सेवकों को बैठा देने की बात बापू ने तय की। इस काम के लिए बापू ने सार्वजनिक रुप से स्वयंसेवकों की माँग पेश की। महाराष्ट्र और गुजरात से संस्कारी और कुशल सेवक मिल गए। और, बापू ने आश्रम से भी कुछ भाई-बहनों को वहाँ बुलवा लिया। गुजरात से गई हुई बहनों को गुजराती का ही थोड़ा-बहुत ज्ञान था। वे बालकों को हिंदी कैसे सिखातीं? बापू ने बहनों को समझाया कि उन्हें बच्चों को व्याकरण नहीं, बल्कि सभ्य जीवन सिखाना है; पढ़ना-लिखना सिखाने के बजाय सफाई के नियम सिखाने हैं। आए हुए भाई-बहन दो-दो या तीन-तीन की टुकडियों में बाँट दिए गए, और उन्हें गाँवों में बैठा दिया गया। भीतीहरवा नाम के गाँव के एक छोटे मंदिर महंत की मदद से मंदिर की अपनी थोडी धर्मादा जमीन पर एक झोपड़ी तैयार करके वहाँ एक मदरसा खोला गया था। बा और दूसरे दो भाई वहाँ रहने लगे।

इस मदरसे में कम-से-कम सहूलियतें थीं। उस हिस्से की हवा भी अच्छी नहीं थी, और हिमालय की तलहटी के ज्यादा नजदीक होने से वहाँ जाड़ों में सर्दी भी बहुत पड़ती थी। रहने के झोपड़ों की छत पर सुबह धुनी रुई की तरह ओस फैली और लदी नजर आती थी। इन शारीरिक कष्टों और अड़चनों के सिवा वहाँ पास ही इस निलहे गोरे की कोठी थी, वह सब गोरों में बदकर माना जाता था। इसी वजह से बापू ने बा को वहाँ रखा था। बा गाँव में घूमने और दवा तकसीम करने का काम करती थीं, जो इस निलहे गोरे से सहा नहीं गया। उसने अखबारों में बेजा शिकायते छपवाई और लिखा: मि. गाँधी नंगे पैर घूमकर और कपड़ों में सादगी बरतकर लोगों में अंधश्रद्धा पैदा करते हैं और उससे फायदा उठाना चाहते हैं; यही नहीं, बल्कि जब वे दूसरी राजनीतिक हलचलों को चलाने के लिए बाहर चले जाते है, तब श्रीमती गाँधी यहाँ लोगों को भड़काने का अपने पति का काम जारी रखती है। वगैरा-वगैरा।

राजनीतिक मामलों से बिलकुल दूर रहनेवाली, केवल भूतदया से प्रेरित होकर ही बीमारों में दवा बाँटने का काम करनेवाली, देहात की भाषा से बिलकुल अनजान, टूटी-फूटी हिंदुस्तानी बोल सकनेवाली, अंग्रेजी अखबारों में किए गए आक्षेपों के बारे में जब तक कोई उन्हें गुजराती में समझा न दे, बिलकुल अनजान रहनेवाली, यानी बहुत थोड़ी पढ़ी-लिखी बा, उस घमंडी निलहे को लोगों में उत्तेजना फैलानेवाली मालूम हुई।

एक बार बा और उनके साथी गाँवों में घूमने गए। जब लौटे तो देखा कि इस झोपड़े में वे रहते थे और जिसमें मदरसा लगता था, वे दोनों जलकर खाक हो गए हैं। सिवा राख के वहाँ उनका कोई निशान तक नहीं रह गया था। इसमें शक नहीं कि काम में रुकावट पैदा करने की गरज से किसी द्वेषी ने आग लगा दी होगी। बा का और उनके साथी श्री सोमण का तो आग्रह था कि मदरसा एक दिन भी बंद न रहना चाहिए। सारी रात जागकर बाँस और घास का एक झोपड़ा खड़ा कर लिया। बाद में पक्का मकान बनाया गया, जो अभी कायम है।

भीतीहरवा के पास ही एक छोटा-सा गाँव है। बापूजी घूमते-फिरते उस गाँव में पहुँचे। वहाँ कुछ बहनों के कपडे़ बहुत ही गंदे नजर आए। बापू ने बा से कहा कि वे उन बहनों को कपड़े धोने के लिए समझाए। बा ने बहनों से बातचीत की। उनमें से एक बहन बा को अपनी झोपड़ी में ले गई और बोली: आप देखिए, यहाँ कोई पेटी या आलमारी नहीं है, जिसमें कपड़े भरे हों। बदन पर यह जो साडी पहने हूँ, यही एक साड़ी मेरे पास है। इसे मैं किस तरह धोऊ? महात्माजी से कहिए, वे कपडे दिलावें, तो मैं रोज नहाने और रोज कपड़े बदलने को तैयार हूँ।

बा ने बापू से सारी हकीकत कही। भारतमाता की इस हालत को देखकर बापू का दिल तड़प उठा।

– हमारी बा (उनकी जीवन कस्तुरी), से साभार पृष्ठ क्र. ८५,८७

आज की समाज रचना

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक स्व. डॉ. भवरलालजी जैन एक गंभीर लेखक एवं चिंतक थे। हम आपकी मराठी कृति 'आज की समाज रचना' से 'पुनर्विचार हेतु सहायक पार्श्वभूमि' विषयक यह महत्त्वपूर्ण लेख का शेष भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। **– संपादक**

विशिष्ट लोगों को चाहिए कि वे नित्य क्रियाशील रहते हुए अपनी बुद्धि और अपने विचारों पर दृढ़ रह कर उसका प्रसार करते रहें। वे अपनी निष्ठा न छोड़ें और आधारभूत समझौते न करें। विनोबा जी कहते हैं, इनमें उपेक्षा की शक्ति होती है। अपनी उपेक्षावृत्ति से वे प्रखर विरोध को भी प्रभावहीन कर देते हैं। आशावादी रहकर लगन से अपने विचारों के प्रति दृढ़ता पूर्वक काम करते रहने से कर्तव्यपूर्ति की एक अनोखी अनुभूति और आनंद की प्राप्ति होती है। यदि ऐसा न भी हुआ तो भी कम से कम भावी पीढ़ी के कल्याण के लिए सहज जीवन की नींव डालने का संतोष तो निश्चय ही मिलता है। जैसे निर्मल समाज के निर्माण में सहयोग तो दिया ही गया हो। एन.ए. पालखीवाला के कथनानुसार – राजनीति कभी भी स्वच्छतर और हमारा आर्थिक भविष्य कभी भी बेहतर नहीं होगा जब तक हमारे नागरिक अपनी जन्मभूमि के प्रति बलिदान के लिए इच्छुक नहीं होंगे। अयोग्य शासन, उदासीन निर्वाचक मंडल इसी का परिणाम है। इस वाक्य में प्रयुक्त शब्द नागरिक बिनोबाजी के सज्जनशक्ति शब्द का रूप माना जाएगा। सज्जनशक्ति सरकार के खिलाफ रहे ऐसा नहीं है। वह सरकार निरपेक्ष, सरकार से अलग रचनात्मक कार्यों में संलग्न और लोकाभिमुख रहे।

सौभाग्यवश विगत कुछ वर्षों में यातायात, आवागमन, परिवहन, संदेशवाहन के लिए संपर्क, संचार, सूचना प्रौद्योगिकी के आविष्कार और शिक्षा के सर्वांगीण विकास एवं मुक्त व्यापार का अप्रत्याशित उद्‌भव हुआ है। जिस पर जाति-पाँति, धर्म, भाषा, समाज, संस्कृति, स्थान और काल की मर्यादाएँ लागू नही होती है। वे सब के प्रति समान व्यवहार रखते हैं। उनके सामने किसी भी प्रकार का भेद-भाव, लाग-लपेट, रोब-दाब, सिफारिश, रिश्ते-नाते आदि नहीं चलते हैं। इन सबकी सहायता से सभी आधारभूत संस्थाओं का कायाकल्प किया जा सकता है। इससे समाज का संपूर्ण ढाँचा परिवर्तित किया जा सकता है। इतना ही नहीं उसकी आर्थिक, राजनैतिक, कानूनी पुनर्रचना का कार्य भी सरलता से किया जा सकता है। किंतु तकनीकी ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा के प्रसार के साथ सत्ता के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया यदि नहीं प्रारंभ हुई, तो परिणाम एकदम विपरीत एवं उत्तेजनापूर्ण होंगे। यदि इनमें सामंजस्य रहा तो विकास रूपी अश्वमेध यज्ञ के अश्व को कोई नहीं रोक सकेगा। हमारी सामाजिकता और रीति-रिवाजों के कारण समय-समय पर स्वीकार की गई राजनैतिक और आर्थिक नीतियों के कारण हजारों वर्षों से प्रचलित भेदभाव, वर्ग-भेद, आर्थिक और सामाजिक विषमताएं कम करने के लिए इन साधनों का विशेष उपयोग हो सकता है। यही ध्रुव सत्य है कि ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और मुक्त बाजार असाधारण समतावादी, समकारक तथा प्राप्त करने के साधन हैं।

संविधान संशोधन (७३ व ७४) कानून १९९२ का भी पार्श्वभूमि के रूप में समावेश करना आवश्यक है। इसके अनुसार केंद्र, राज्य सरकार और स्थानीय निकायों के पंचायत, नगरपालिका को सरकारों की तरह ही काम-काज करने, कर लगाने और अपना भविष्य स्वयं बनाने के लिए आवश्यक सभी अधिकार प्रदान किए गए हैं। उनके चुनावों के लिए स्वतंत्र

डॉ. भवरलालजी जैन

राज्यस्तरीय चुनाव आयोग गठित किया गया है। संविधान की ११वीं एवं १२ वीं अनुसूची में उन्हें पूर्ण अधिकार देने का प्रावधान है। इस संशोधन के अनुसार स्थानीय निकाय और उनकी संस्थाओं को सक्षम बनाने के लिए संवैधानिक अधिकार प्रदान किए गए हैं। यदि इसका विधिवत क्रियान्वयन किया जाए तो जनप्रतिनिधियों को विधायक होने की अपेक्षा जिला परिषद का सदस्य होना, या राज्यमंत्री होने की अपेक्षा जिला परिषद का अध्यक्ष होना अधिक आकर्षक लगने लगेगा। सर्वप्रथम यह कर्नाटक राज्य में क्रियान्वित और सफल हुआ। अब लगभग यह प्रत्येक राज्य में क्रियान्वित हो चुका है। सफलतापूर्वक अपने उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति कर रहा है।

मुगल काल में देश गुलाम था, किंतु गाँव लगभग स्वतंत्र थे। सल्तनत द्वारा निर्धारित लगान केवल केंद्रीय कर्मचारियों द्वारा संग्रह किया जाता थी। शेष रकम किसी न किसी रूप में उसी गाँव या प्रदेश के अधीन रहती थी। तात्पर्य यह है कि, तत्कालीन भारत स्वाधीन गाँवों का पराधीन देश था। ग्रामीण समाज हमेशा ही बलशाली और एकता के सूत्र में बँधा रहा है। पहली बार अंग्रेजों ने १७९३ में इस प्रणाली को तोड़ा। ग्राम पंचायतों और ग्रामोद्योगों को नष्ट किया। लगान की सारी रकम केंद्र में इकट्ठा करने के लिए ऊपर से निचले स्तर तक भेजने की प्रथा शुरू की। परिणामत: देश के साथ गाँव भी पराधीन हो गए। यही पद्धति हमने आज भी जारी रखी है। आज देश स्वतंत्र है, पर गाँव परतंत्र हो गए हैं। उपर्युक्त संविधान संशोधन से अधिकारों का विकेंद्रीकरण करके स्वतंत्र गाँवों द्वारा भारत का नवनिर्माण करना असंभव नहीं है। इसके माध्यम से समाज के प्रश्न स्थानीय स्तर पर, आवश्यकतानुसार, दृढता से हल करने में भरपूर सहायता मिल रही है। उनका अपना भला-बुरा उत्तरदायित्व स्थानीय स्तर पर तय किया जा रहा है। पाप और पुण्य की भागीदारी स्थानीय लोगों की है। गाँव के लोग अपना कामकाज स्वतंत्र रूप से चला रहे हैं। राष्ट्रीय नियोजन का अर्थ ग्रामनियोजन हो गया है। इस प्रकार हर एक गाँव में स्वराज्य की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। महात्मा गाँधी और आचार्य विनोबा भावे की यही धारणा थी कि गाँव अपने द्वारा स्वशासित हो। जो आज भी सत्य एवं शाश्वत है। किंतु दुर्भाग्य वश इन स्थानीय निकाय चुनावों का भी परोक्ष रूप से राजनीतिकरण हो गया है। इस कारण स्वराज्य की अवधारणा प्रारंभ होने के पहले मृतप्राय होती दिखाई पड़ रही है। इसके लिए ग्रामीणों में आत्ममंथन की आवश्यकता है कि वे स्वशासित होना चाहते है या पूर्ववत परतंत्र ही बने रहना चाहते हैं। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यमान सज्जन शक्ति का उत्तरदायित्व अधिक बढ़ जाता है।

क्रमश:

फाउण्डेशन की गतिविधियां

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन बहुआयामी गतिविधियों के माध्यम से गाँधीजी के जीवन मूल्यों को व्यक्ति और समाज में स्थापित करने हेतु सदा प्रयत्नशील रहा है। संस्था का मूल उद्देश्य ही सत्य, अहिंसा, शांति, आपसी सहयोग की भावना का वैश्विक स्तर पर विकास करना है। फाउण्डेशन द्वारा ग्राम समुदाय के शाश्वत विकास की दिशा में आगे बढ़ने हेतु बहुविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, प्रस्तुत है एक रिपोर्ट – ***संपादक***

'किसान का सम्मान, गाँव का सम्मान' पदयात्रा

झंवर विद्यालय में पदयात्रा का शुभारंभ करते हुए अतिथिगण

गाँधीजी की पुण्यतिथि पर बापू को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए फाउण्डेशन द्वारा वार्षिक पदयात्रा का आयोजन किया जाता है। बापू के विचारों को जन समुदाय तक पहुंचाने के उद्देश्य से तथा ग्रामीण जीवन की बेहतरी के लिए इस पदयात्रा में विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से हर साल नए विषय के साथ पदयात्रा आयोजित की जाती है। वर्ष २०१८ के लिए 'किसान का सम्मान, गाँव का सम्मान' इस विषय पर आधारित पदयात्रा का आयोजन ३० जनवरी से ८ फरवरी २०१८ तक किया गया।

इस पदयात्रा के अंतर्गत जलगाँव जिले के धरणगाँव तहसील के ५ गाँव- पालधी-पथराड-बोरखेडा-हनुमंतखेडा-निंभोरा और शेरी में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। हर एक गाँव में दो दिन रहकर ग्राम सफाई, कृषि विषय पर मार्गदर्शन, मिट्टी परीक्षण, विद्यालयों में छात्रों के साथ 'मोहन से महात्मा' प्रदर्शनी एवं मूल्य आधारित कार्यक्रम आयोजित किए गए।

यात्रा का शुभारंभ: ३० जनवरी के दिन पालधी गाँव स्थित झंवर विद्यालय के प्रांगण से पदयात्रा का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान धरणगाँव तहसील के विस्तार विकास अधिकारी श्रीमान् जाधव, पंचायत समिति के सदस्य मुकुंद नन्नवरे, पालधी गाँव के उप-सरपंच गौतम गोर्हाईत, झंवर विद्यालय के मुख्याध्यापक शरद कासट, फाउण्डेशन के मुख्य समन्वयक उदय महाजन, डीन डॉ. जॉन चेल्लदूरै, फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं पालधी तथा बोरखेड़ा गाँव के ग्रामजन बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। बोरखेड़ा गाँव के जे. के. पाटील ने हरी झंडी दिखाकर पदयात्रा का शुभारंभ किया। ग्राम स्वराज्य व स्वच्छता के नारों के साथ पदयात्रा अपने मार्ग पर प्रस्थान कर पथराड़ गाँव पहुँची जहाँ पदयात्रियों का पहला पड़ाव था।

रचनात्मक कार्यक्रम की श्रृंखला: पदयात्रा के दौरान हर एक गाँव में सुनिश्चित रूप से तय किए गए कार्यक्रमों को अंजाम दिया गया। एक गाँव में दो दिन का मुकाम निर्धारित किया गया था और उस दौरान निम्न प्रकार के कार्यों को अंजाम दिया गया।

श्रमदान: उस दो दिनों के दौरान सुबह के समय गाँव के सार्वजनिक जगहों पर लोक भागीदारी आधारित श्रमदान किया गया। श्रमदान के दौरान लोगों की सहभागिता प्राप्त करने के उद्देश्य से फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा प्रेरणात्मक गीत का समूहगान किया जाता था। उक्त पाँच गाँवों में श्रमदान के दौरान साधारण मात्रा में लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ।

निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति की ओर अटल रूप से आगे बढ़ता पदयात्रियों का समूह

महिला सशक्तीकरण: मोहल्ला बैठक के दौरान महिलाओं को 'स्वयं सहायता समूह' के बारे सम्यक् जानकारी दी जाती थी तथा उद्योग के संबंध में प्रत्यक्षीकरण किया जाता था। इस पदयात्रा के दौरान मोहल्ला बैठकों में करीब १२०० से अधिक महिलाओं को स्वयं सहायता समूह व उद्योग के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इस बैठक के दौरान बोरखेड़ा व हनुमंतखेड़ा में साबुन बनाने की प्रविधि का प्रत्यक्षीकरण किया गया। युवतिओं में कला-कौशल का निर्माण करने के उद्देश्य से संध्या समय पर रंगोली स्पर्धा का आयोजन भी इस पदयात्रा के दौरान किया जाता था। कथित गाँवों में से इस रंगोली स्पर्धा में करीब ८० लड़कियों ने भाग लिया।

कृषि व किसान: किसानों के साथ खेत की मुलाकात एवं वर्तमान समय में खेती की पद्धति, पानी का महत्व, पशु धन को कैसे संभाल सकते हैं, इन विषय पर कृषि निष्णात व्यक्तियों के द्वारा प्राथमिक जानकारी साझा की गई। इस बैठक के दौरान किसानों के सवाल का उचित जवाब भी कृषि निष्णांत व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस पदयात्रा में कृषि निष्णात के रूप में जैन इरिगेशन सिस्टिम्स ली. के डॉ. बी. डी. जडे उपस्थित थे। किसान के खेत की मिट्टी में कौन से तत्त्व उपस्थित हैं और किसी भी फसल के लिए मिट्टी का परीक्षण करना क्यों आवश्यक है? इस विषय पर राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स के कार्यकर्ता ने किसानों का मार्गदर्शन किया। साथ-साथ इन पांचों गाँवों में मिट्टी परीक्षण करने के लिए किसानों को आह्वान भी किया गया।

इस श्रृंखला का बड़ा कार्यक्रम निंभोरा व शेरी गाँव में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. बाहेती, श्रीमान वेंगुर्लेकर व डॉ. जड़े आदि ने किसानों को संबोधित किया।

सोलार चरखा कार्यक्रम: पदयात्रा के दौरान गाँव के चौराहे पर फाउण्डेशन द्वारा निर्मित एक सोलार चरखे का डेमो खड़ा किया जाता था, जिसे देखने के लिए गाँव की महिलाएँ एवं युवा समूह बड़ी मात्रा में आते थे। उस दौरान फाउण्डेशन के कार्यकर्ता चरखे के बारे में एवं उससे निर्मित आजीविका तथा उनके अर्थशास्त्र के बारे में जानकारी देते थे। इस प्रत्यक्षीकरण के द्वारा इन पाँच गाँवों के करीब २०० परिवार चरखे से परिचित हुए और चरखे माध्यम से कृषि पूरक व्यवसाय का निर्माण किया जा सकता है, यह संकल्पना को बल मिला।

स्वावलंबन के प्रतिक – चरखे का प्रत्यक्षीकरण

शिक्षा कार्यक्रम: पदयात्रियों का एक समूह विद्यालय में 'मोहन से महात्मा' प्रदर्शनी एवं विभिन्न प्रकार के खेल के माध्यम से बच्चों में मूल्य आधारित गतिविधियों को साकार रचनात्मक प्रयास किया। पदयात्रा के दौरान करीब ६०० से ७०० छात्र-छात्राओं ने 'मोहन से महात्मा' प्रदर्शनी का लाभ उठाया एवं महात्मा गाँधी पर आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता व सांस्कृतिक कार्यक्रम का हिस्सा बने।

नि:शुल्क पशु चिकित्सा कैंप

पदयात्रा के दौरान प्रत्येक गाँव में नि:शुल्क पशु चिकित्सा कैंप का आयोजन किया गया। गाँव में गाय, बैल, भैंसों में विपरीत वातावरण के कारण हर साल 'लाळ्या खुरकत' नामक विषाणु रोग फैल जाता है और अधिकतर पशुओं की इस बीमारी के कारण मृत्यु हो जाती है। वर्ष २०१७-१८ में पूरे महाराष्ट्र राज्य में लाळ्या खुरकत टीकाकरण की औषधि उपलब्ध नहीं हो पाई थी। इसलिए फाउण्डेशन ने महाराष्ट्र वेटरीनरी कौंसिल के सदस्य व पशुवैद्य डॉ. डी. एस. पाटील के मार्गदर्शन में बोरखेड़ा, हनुमंतखेड़ा व धार में संयुक्त रूप से १८५० पशुओं का निदान एवं लाळ्या खुरकत औषधी का

पशु चिकित्सा कैंप का दृश्य, हनुमंतखेडा

टीकाकरण किया गया। इस पशु चिकित्सा कैंप में डॉ. डी. एस. पाटील, डॉ. ए. डी. भालेराव, डॉ. प्रियंका भिगवडे, डॉ. राहुल सालुंखे तथा डॉ. हेमंत इंगले ने तीन गाँव में आयोजित इस कैंप में अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन प्रदान कर कई बीमार पशुओं का निःशुल्क उपचार किया।

बा-बापू १५० कार्यक्रम के अंतर्गत 'किसान का सम्मान, गाँव का सम्मान' विषय पर आयोजित इस ग्राम स्वराज्य पदयात्रा के द्वारा समग्र ग्राम विकास की प्रक्रिया को बल मिलेगा एवं लोकसहभाग आधारित प्रक्रिया में एक कदम आगे बढ़ने में निश्चित ही सहायता मिलेगी। इस पदयात्रा में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता व समाज कार्य स्नातकोत्तर अभ्यासक्रम के छात्र को मिलाकर कुल २५ लोग पूर्ण समय के लिए उपस्थित थे। इस पदयात्रा का सफल व्यवस्थापन कार्य फाउण्डेशन के कार्यकर्ता विनोद रापतवार व सुधीर पाटील ने किया।

पारावरच्या गप्पा (चौराहे की बातें)

पहले हर गाँव में एक चौराहा या सामूहिक बैठक की एक जगह होती थी। गाँव की पंचायत, बड़े-बुजुर्ग व्यक्तीयों का समूह चर्चा व निर्णय करने हेतु शाम को इकठ्ठा बैठते थे। इस जगह को महाराष्ट्र में पार या चावडी कहते है। इसका फायदा यह होता था कि गाँव का कोई मसला, उलझन या गंभीर समस्या का निराकरण व सामूहिक निर्माण कार्य का निर्णय गाँव ही करता था। पिछले कुछ दशकों से यह प्रथा लुप्त हो रही है या यूं कहे खत्म हो चुकी है।

अगर हम विकासात्मक पहलू में लोकभागिदारी प्राप्त करना चाहते है तो लोक संवाद होना जरूरी बन जाता है। फाउण्डेशन का प्रयास है कि पारावरच्या गप्पा कार्यक्रम के माध्यम से जन जागृति एवं लोकभागिदारी प्राप्त करने में सहायता होगी। इस कार्यक्रम का पहला प्रयोग बोरखेड़ा गाँव में जलगाँव जिलाधिकारी किशोरराजे निंबालकर की अध्यक्षता में

'पारावरच्या गप्पा' कार्यक्रम में बोरखेड़ा ग्रामजनों को संबोधित करते जिलाधिकारी

संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता विनोद रापतवार ने पारावरच्या गप्पा का महत्व व उनकी पूर्व भूमिका को प्रस्तुत किया। जिलाधिकारी महोदय ने सुयोग्य रूप से विकासात्मक कार्य में प्रशासन व लोकसहभाग के महत्व को विश्लेषित किया। बोरखेड़ा गाँव की ओर से भी इस कार्यक्रम में विकासलक्षी व पीने के पानी के संदर्भ में व्यवस्था निर्माण करने के मुद्दे प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम में करीब १२०० से १३०० लोग उपस्थित थे। कई समाचार पत्रों व मीडिया समूह ने इस कार्यक्रम की सराहना की और यह भी अभिव्यक्त किया कि फाउण्डेशन द्वारा आयोजित इस कार्य ने फिर से हमारी धरोहर समान 'पारावरच्या गप्पा' की नींव डाली हैं। ♦♦♦

आइए, गाँधी को जाने(गाँधी समजून घेताना) शिविर संपन्न

शिविर के उद्घाटन सत्र में उपस्थित विशेषजन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन एवं आम्ही सारे फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में १६ से १८ फरवरी २०१८ के दौरान गाँधी तीर्थ पर आयोजित 'गाँधी समजून घेताना' (गाँधी को समझे) इस शिविर का समापन हुआ।

मोहनदास करमचंद गाँधी को आदर्श मूर्तिमंत या ईश्वरवादी रूप दे कर हम उनके व्यावहारिक जीवन को नहीं समझ सकते। इसी विचार के साथ आम्ही सारे फाउण्डेशन ने गाँधीजी को समझने के लिए एक अलग प्रयास किया। पिछले चार साल से इस फाउण्डेशन के द्वारा गाँधीजी से संबंधित विभिन्न विषयों पर शिविर का आयोजन किया जाता है। इस शिविर के माध्यम से गाँधीजी को विभिन्न दृष्टीकोण से समझकर उनके व्यक्तित्व का सत्व खोज ने का प्रयास किया जाता है। किसी भी विचार के प्रति आग्रह न रखते हुए सभी लोग एक जगह उपस्थित होकर गाँधीजी को विवेकवादी दृष्टि से समझने का प्रयास इस शिविर में करते हैं। गाँधी तीर्थ पर आयोजित इस शिविर में महाराष्ट्र के विभिन्न भागों से करीब ६८ सहभागी उपस्थित थे। इस श्रृंखला का यह चौथा शिविर था, इससे पहले तीन शिविरों का सफल प्रयोग क्रमशः सेवाग्राम आश्रम वर्धा, आगाखान महल पुणे, रिट्रिट हाउस मुंबई इन जगहों पर हो चुका है।

१५ फरवरी तक सभी शिविरार्थी व वक्ताओं का आगमन जैन हिल्स स्थित गाँधी तीर्थ पर हो चुका था। पहले दिन पंजीकरण व परिचय सत्र के साथ साथ असगर वजाहत के द्वारा लिखा गया नाटक 'गोडसे@गाँधी.कॉम' सभी सहभागियों ने देखा।

उद्घाटन सत्र में चंद्रकांत वानखेडे, अमर हबीब, तुषार गाँधी, अविनाश दुधे तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन आदि मान्यवर उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र का प्रारंभ दिप-प्रज्वलन से किया गया तत्पश्चात

समापन सत्र के बाद समूह तसवीर के लिए उपस्थित सहभागी एवं अतिथिगण

आम्ही सारे फाउण्डेशन के बारे में अविनाश दुधे ने जानकारी प्रदान की। उद्घाटक भाषण में अपने मनोगत प्रस्तुत करते हुए अशोक जैन ने गाँधी तीर्थ निर्माण की प्रेरणा एवं भविष्य की योजना पर प्रकाश डाला।

१७ फरवरी सुबह का सत्र: इस शिविर का पहला सत्र कुमार शिरालकर ने 'मार्क्सवादी भूमिका से गाँधी' विषय पर प्रस्तुत किया। शिरालकर ने कहा कि किसी भी बलपूर्वक प्रयत्न से किसी के मन परिवर्तन को महत्व देकर इनसान के अंदर की इनसानियत को जगाना एवं शोषण को रोकना ही गाँधीजी की कोशिश थी। इसीलिए गाँधीजी के सत्याग्रह में देश की जाती भेद की सीमाएं तोड़कर मजदूर, किसान और महिलाओं ने सहभाग लिया। गाँधी और मार्क्सवादी विचारधारा एक-दूजे के पूरक हैं, ऐसा मत विविध संदर्भ को रखते हुए कुमार शिरालकर ने प्रस्तुत किया।

दोपहर का सत्र: सुधाकर जाधव ने 'गाँधीजी की प्रासंगिकता' इस विषय पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि जाती निर्मूलन में गाँधीजी को भले ही पूरा यश प्राप्त न हुआ हो किंतु 'यह एक अनैतिक बात है' यह भावना तो लोगों के दिलों में पैदा हो चुकी थी। सुधाकर जाधव ने अपने इस कथन को विभिन्न प्रसंगों का उदाहरण देकर स्पष्ट किया।

संध्या सत्र: संध्या सत्र में गाँधीजी के प्रपौत्र तुषार गाँधी ने 'कस्तूरबा का गाँधीजी के कार्यों में योगदान' इस विषयपर अपने पिताजी के प्रसंगों के साथ कई अनजान पहलुओं पर प्रकाश डाला। कस्तूरबा के जीवन से जुड़ी जानकारी व उनके योगदान के बारे में तुषार गाँधी ने अपनी हृदय द्रावक भावना में कई रोचक तथ्य प्रस्तुत किए।

संवाद सत्र: संध्या भोजन के बाद चर्चा व प्रश्नोत्तरी सत्र का आयोजन किया गया था। इस सत्र में उपस्थित सहभागियों के सवाल तथा तुषार गाँधी, चंद्रकांत वानखेडे एवं अमर हबीब के जवाब। इस सत्र में गाँधी हत्या व आंदोलन से संबंधित कई सवाल वक्ताओं को पुछे गए और उतने ही अधिकृत प्रत्युत्तर महानुभावों से प्राप्त हुए।

१८ फरवरी का पहला सत्र: मराठी लेखक बी. उत्पल ने 'गाँधी क्यू रास्ते में आता है?' इस विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि गाँधीजी अपने सिद्धांत के प्रति निष्ठावान थे उनकी नैतिक विचारधारा आज की हर समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है। किसी भी स्थायी समस्या का समाधान भी गाँधीविचार है, वे सहअस्तित्व की बात करते थे इसलिए हम किसी भी समस्या का या शाश्वत जीवन पद्धति का उपाय खोजेंगे तो स्वाभाविक रूप से हम गाँधी को वहाँ पाएंगे।

दूसरा सत्र: आम्ही सारे फाउण्डेशन के सदस्य व किसान आंदोलन के कार्यकर्ता अमर हबीब ने कहा कि गाँधीजी मेरी पीढ़ी की समस्याओं का उत्तर हो सकता है क्या? किसानों की समस्या, महिलाओं की समस्या आदि। मैं यह निश्चित रूप से कहता हूँ कि गाँधीजी ने क्रांति को करुणा से जोड़ दिया है और हर समस्या का सरल जवाब प्रस्तुत किया है। सादगी पूर्ण अहिंसक जीवन व सत्य के प्रति आग्रह की यह दो बात गाँधीजी की ओर से मानवता के लिए बड़ी देन है। और वे पीढ़ियों तक मानवजाती को चेतना प्रदान करते रहेंगे।

समापन सत्र: समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में चंद्रकांत वानखेडे, अविनाश दुधे और अमर हबीब उपस्थित थे। चंद्रकांत वानखेडे ने अपने समापन व्यक्तव्य में भारत की मौजूदा सामाजिक और राजकीय स्थिति के मुद्दों पर प्रहार किया और शाश्वत समाधान कि ओर इशारा करते हुए कहा कि गाँधी को समझ लेना है, उसकी पुजा नहीं करनी है उस विचारों को हमारे अंदर उतारने कि कोशिश करनी है। उपस्थित सहभागियों ने अपनी त्वरित प्रतिक्रिया प्रस्तुत की, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के सहयोगी भुजंगराव बोबडे ने अपने मनोगत व्यक्त करते हुए कहा कि

हम सब मिलकर गाँधीजी के सपनों का गाँव, अर्थात हमारा अपना गाँव ही एक तीर्थ बनाने का प्रयास निरंतर करते रहेंगे। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन एवं आम्ही सारे फाउण्डेशन का यह प्रयास उपस्थित कई सहभागियों के लिए गाँधीजी का जीवन दर्शन समझने के लिए एक असरकारक माध्यम बना। ♦♦♦

विश्व महिला दिवस पर कार्यक्रमों की श्रृंखला

महिला आरोग्य शिविर: ८ मार्च २०१८ विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन द्वारा दापोरा गाँव में महिला चिकित्सा एवं हिमोग्लोबीन परिक्षण शिविर का सफल आयोजन किया गया।

आरोग्य विषयक परिक्षण में व्यस्त डॉ. स्नेहल पाटील

फाउण्डेशन द्वारा कार्यरत बा-बापू १५० कार्यक्रम में तय किए गए छह मुद्दों में ग्रामीण आरोग्य को स्थान दिया गया है। इस उपलक्ष्य में सभी चयनित गाँवों में आरोग्य शिविर लगाए जाएंगे। इस आरोग्य शिविर की शुरुआत जलगाँव जिले के दापोरा गाँव से हो चुकी है। विश्व महिला दिवस के इस अवसर पर आयोजित इस शिविर में दापोरा गाँव की करीब २१५ महिलाओं का आरोग्य संबंधी निदान किया गया है। जिला आरोग्य विभाग तथा अनुभूति इंटरनेशनल स्कूल के उपचार केंद्र से डॉ. स्नेहल पाटील और उनकी टीम ने चिकित्सा शिविर में अपना सहयोग प्रदान किया। इस शिविर के उद्घाटन कार्यक्रम में दापोरे गाँव की महिला सरपंच श्रीमती अर्चना सोनवणे उपस्थित थे। फाउण्डेशन के सहयोगी विनोद रापतवार, सुधीर पाटील, आशुतोष कुमठेकर तथा सागर चौधरी ने इस शिविर को सफल करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

विश्व महिला दिवस की शुभकामना: शेरी गाँव में घर-घर जा कर महिलाओं को विश्व महिला दिवस की शुभकामना दी गयी। बा-बापू १५० के अंतर्गत चयनित गाँवों में से बोरखेडा और शेरी गाँव में हमारे समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा अभ्यासक्रम के छात्रों के दूसरे पड़ाव में 'सामुदायिक निवास' की शुरुआत फरवरी से हो चुकी है। इन छात्रों द्वारा उक्त दोनों गाँवों में विश्व महिला दिवस के अवसर पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शेरी गाँव में सामुदायिक निवास में धनश्री पाडवी और चारुलता मोरे हैं। इन दोनों छात्राओं ने विद्यालय के छात्रों के साथ गाँव की महिलाओं को उनके घर-घर जा कर विश्व महिला दिवस की शुभकामनाएं दी। इस प्रयास से शेरी गाँव की महिलाओं को गौरव की अनुभूति हुई और इन दो छात्राओं के प्रति विशेष सम्मान का भाव निर्माण हुआ।

बोरखेड़ा प्राथमिक शाला में कार्यक्रम: बोरखेडा गाँव में सामुदायिक निवास के लिए समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा अभ्यासक्रम के तीन छात्र ज्ञानेश्वर शिरसाट, विक्रम अस्वार तथा गणेश चाफेकर हैं। इस समूह द्वारा बोरखेड़ा गाँव की प्राथमिक शाला में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में प्राथमिक शाला के छात्रों के साथ विश्व महिला दिवस का महत्त्व साझा किया। पिछले साल दसवीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्रा कु. कोमल पाटील को बोरखेड़ा ग्राम तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से सम्मानित किया गया।

फाउण्डेशन के इस प्रयास से उपरोक्त दोनों गाँवों के ग्रामजनों में खुशी की लहर फैली है और लोग साथ मिलकर सामुदायिक विकास की पहल में आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। ♦♦♦

कोई माता व कोई बच्चा भूखा नहीं सोना चाहिए – फूलबासन देवी यादव

१० मार्च २०१८, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के प्रांगण में विशेष संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। उस संवाद कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के राजनंदगाँव जिला से पधारी श्रीमती फूलबासन देवी यादव मुख्य मेहमान के रूप में उपस्थित थी। संवाद कार्यक्रम में अपने अनुभव साझा करते हुए आपने निम्न बातें प्रस्तुत की-

गरीबी सभी समस्याओं की जड़ है यह मैंने अपने बचपन से ही देखा है। मेरी शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक ही हुई है। निर्बल परिस्थितियों की वजह से मैं आगे नहीं पढ़ पाई। मेरे कई दिन और रात ऐसे बीते जहाँ अन्न का एक निवाला भी नसीब नहीं हुआ। पर मैंने ठान ली थी की इस भयंकर गरीबी की स्थिति में भी मुझे आगे बढ़ना है और इसी हौसले को बरकरार रखते हुए अपने गाँव की ११ महिलाओं को एकत्रित कर साल २००१ में 'मां बम्लेश्वरी स्व-सहायता समूह' का गठन किया। बचत की शुरुआत २ मुठ्ठी चावल और २ रुपये से हुई। समुदाय की ओर से इस बात का कई तरह से विरोध भी हुआ। यहाँ तक की हमारे परिवार वालों ने भी हमारा साथ नहीं दिया, फिर भी हम अपने कार्य को निष्ठा के साथ करते रहे। नतीजा यह प्राप्त हुआ कि आज राजनांदगाँव जिले के लगभग सभी गाँवों में हमारे द्वारा बनाए संगठन के माध्यम से महिलाओं ने शिक्षा और सफाई की सोच के साथ अचार, पापड़ जैसे कई उद्योगों की शुरुआत की है और बम्लेश्वरी ब्रांड के नाम से छत्तीसगढ़ के तीन सौ से ज्यादा जगहों पर उसे बेचा जाता है। अब तो करीब २ लाख महिलाएं इस पहल के माध्यम से आर्थिक आजादी प्राप्त करने की दिशा में अग्रेसर हैं।

भविष्य में किस तरह के कार्य करने की योजना है, इस सवाल का प्रत्युत्तर देते हुए फूलबासन देवी ने कहा कि 'मेरा केवल एक ही लक्ष्य है कि कोई माता व कोई बच्चा भूखा नहीं सोना चाहिए' इसके लिए पूरे देश में ऐसा कार्य करने की तमन्ना है और यह भी कोशिश है कि सशक्तीकरण के द्वारा महिलाओं को गरिमापूर्ण स्थान प्रदान किया जाए।

संवाद कार्यक्रम में उपस्थित फुलबासन देवी, अतिथिगण एवं फाउण्डेशन के कार्यकर्ता

फूलबासन देवी जी के अनुभव से इतना तो अवश्य कह सकते हैं कि पारंपरिक शिक्षा के बगैर भी व्यक्ति अपने आपको समाज की बेहतरी के लिए अपना योगदान समर्पित कर सकता है।

महिलाओं के सशक्तीकरण एवं उनके उत्थान के लिए फूलबासन देवी के द्वारा किए गए सार्थक प्रयासों के चलते छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा उन्हें वर्ष २००४-०५ में 'मिनी माता' अलंकरण से सम्मानित किया गया। २००८ में जमनालाल बजाज पुरस्कार तथा २०१२ में देश के सर्वोच्च चार नागरिक पुरस्कारों में से भारत सरकार के द्वारा उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है।

नारी सशक्तीकरण की साक्षात् उदाहरण फूलबासन देवी यादव आज कितनी महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन चुकी हैं। उनके अंदर व्याप्त संवेदना, जज्बा प्रतिदिन उन्हें आगे बढ़ाने को न सिर्फ प्रेरित करता है, बल्कि प्रवृत्त भी करता है।

गाँधी तीर्थ पर आयोजित इस संवाद कार्यक्रम में जलगाँव रोटरी क्लब के प्रोग्राम समन्वयक डॉ. लोढ़ा बहन, जैन इरिगेशन के सुरक्षा विभाग के मुख्य अधिकारी कैप्टन कुलकर्णी तथा फाउण्डेशन के मुख्य कार्यकर्ता समूह के साथ ग्रामीण कार्य में व्यस्त कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सूत्र-संचालन अश्विन झाला ने तथा समापन विनोद रापतवार ने किया। ♦♦♦

संगीत के द्वारा शांति की अनुभूति; श्रृंखला-२

संगीत का प्रवाह आदिकाल से अनवरत प्रवाहमान है। यह हृदय की वह अभिव्यक्ति है जो न सिर्फ मनुष्य प्रभावित होते हैं बल्कि पशु-पक्षी और कीट-पतंग भी प्रभावित होते हैं। प्रकृति निरंतर संगीत लहरियां छेड़ती रहती हैं बस ध्यान से महसूस करने की तैयारी चाहिए।

गाँधीजी ने अपने जीवन में संगीत को अलग स्थान दिया था। उनके द्वारा स्थापित आश्रम एवं सामुदायिक प्रार्थना संगीतमय वातावरण का निर्माण करती थी। उनके लिए दैनिक गतिविधियों के साधन में से जो आवाज आती थी वह भी संगीत की अनुभूति करवाती थी। जैसे चरखे की आवाज, हल चलाने की आवाज, गाय और भैंस का दूध निकालने की आवाज, करघा की आवाज आदि। संगीत को न सीमाओं में बांधा जा सकता है न नष्ट किया जा सकता है। यह अबाध धारा सबके लिए सर्वत्र सुलभ है। यह आत्मा की वह कुंजी है जो शांति की अनुभूति करवाती है।

फाउण्डेशन द्वारा बा-बापू १५० कार्यक्रम की श्रृंखला अंतर्गत 'म्यूजिक फॉर पीस' नामक संगीत कार्यक्रम की दूसरी शृंखला जलगाँव स्थित गाँधी

सितार और पखवाज कार्यक्रम में उपस्थित पं. उद्धवबापू आपेगांवकर व बर्ट कार्नलिस

संगीत महफिल में उपस्थित महानुभाव व संगीत-प्रेमी समूह

उद्यान में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में यूरोप के प्रसिद्ध सितार वादक बर्ट कॉर्नलिस और भारत के प्रसिद्ध पखवाज वादक उद्धवबापु शिंदे आपेगावकर उपस्थित थे। इन दोनों महानुभावों ने अपने वाद्य सितार व पखवाज की जुगलबंदी में कई प्रसिद्ध रचनाओं को बजाकर संगीत प्रेमियों के दिलों को जीत लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक दलीचंद ओसवाल, सुदर्शन आयंगार, ज्योति जैन एवं उपस्थित संगीत विद् पंडित उद्धवराव आपेगावकर एवं बर्ट कॉर्नलिस के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की प्रास्ताविक में प्रो. गीता धरमपाल ने गाँधीजी व संगीत के संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत किया तथा सूत्र-संचालन विनोद रापतवार ने किया। इस कार्यक्रम में अनुभूति स्कूल की संचालिक निशा जैन, डी. एम. जैन, सुनिल देशपांडे तथा जलगाँव शहर के संगीत प्रेमीवर्ग बड़ी मात्रा में उपस्थित थे। ♦♦♦

रवंजा गाँव में सहकारी खेती की पहल

लघु एवं सीमांत कृषक अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कृषि कार्य करते है, किंतु सीमांत किसान के लिए अकेले खेती करना कष्टदायक हो गया है। उनके पास जमीन कम होती है और ऊपर से विपणन व्यवस्था भी ठीक नहीं होती। खेती कार्य के लिए मजदूर मिलना भी मुश्किल होता है ऐसी स्थिति में हमारे किसान करें भी तो क्या करें। किंतु एक असरकारक उपाय यह है कि क्या हम सीमांत किसानों को संगठित कर सहकारी खेती करने के लिए उन्हें प्रेरित कर सकते है।

फाउण्डेशन के द्वारा सीमांत किसानों को आर्थिक समृद्धि की ओर ले जाने के लिए सहकारी खेती के अभिगम को आगे बढ़ाने कि शुरुआत की

सहकारी कृषि के लिए आयोजित बैठक में उपस्थित फाउण्डेशन के कार्यकर्ता व किसान समूह

गई है। जलगाँव जिला के रवंजा गाँव में सहकारिता पर आधारित खेती की शुरुआत करने के लिए वहाँ के किसान तैयार हैं और इस विषय में फाउण्डेशन उनको मार्गदर्शन कर रहा है। १६ किसानों से शुरू होने वाले इस प्रकल्प में अगले दो सालों में ६० किसान परिवार इस सहकारी खेती हेतु सम्मिलित होने वाले हैं। इस संदर्भ में फाउण्डेशन के ग्रामीण कार्यकर्ता चंद्रकांत चौधरी, प्रशांत सूर्यवंशी और आशुतोष कुमठेकर रवंजा गाँव के किसानों को समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। ♦♦♦

गाँवों में जीवन उपयोगी शिक्षा की शुरुआत

बोरखेड़ा: फाउण्डेशन में कार्यरत पीजी डिप्लोमा अभ्यासक्रम के छात्र गणेश चाफेकर, विक्रम अस्वार और ज्ञानेश्वर शिरसाट के द्वारा बोरखेड़ा गाँव के बच्चों के साथ मूल्य शिक्षा के अंतर्गत कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। मूलत: बच्चों में स्वावलंबन का नजरिया आए, इस उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की गतिविधियां- जैसे खेल व ओरिगेमी से मूल्य शिक्षा की शुरुआत की गई है।

शरीर सौष्ठव की शिक्षा प्रदान करने में व्यस्त पीजी डिप्लोमा के कार्यकर्ता

शेरी: पीजी डिप्लोमा की छात्राएं- चारुलता मोरे और धनश्री पाडवी ने शेरी गाँव के बच्चों में शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए सुबह प्राणायाम और संध्या के समय पर बच्चों के साथ मिलकर विभिन्न खेल व मूल्य शिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते है। उक्त कार्य के लिए दोनों गाँव के विद्यालय के शिक्षकवृंद का सहयोग मिल रहा है। ♦♦♦

गौराई बहुउद्देशीय केंद्र जनहित के लिए समर्पित

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक भवरलालजी जैन के द्वितीय स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में वावडदा गाँव में स्व. गौराई हिरालालजी जैन बहुउद्देशीय केंद्र का विधिवत भूमि पूजन गणमान्यों के द्वारा किया गया।

भूमि पूजन कार्यक्रम से पहले राष्ट्रीय कीर्तनकार गुलाबराव महाराज के द्वारा ग्राम गीता पर कीर्तन प्रस्तुत किया गया। कीर्तन में गुलाबराव महाराज ने ग्राम स्वराज्य से संबंधित गाँधीजी और तुकडोजी महाराज की बातें जैसे स्वच्छता, बंधुता, निर्व्यसनता, श्रम संस्कृति, बुनियादी शिक्षा आदि तत्त्वों को अपनी अनोखी शैली में लोगों के सामने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत में उपस्थित गणमान्यों के द्वारा श्रद्धेय भवरलालजी जैन की माता स्व. गौराई एवं भवरलालजी जैन की प्रतिमा को माल्यार्पण किया गया। इसके पश्चात् उपस्थित महानुभावों ने अपने मनोगत व्यक्त किए। कविवर्य ना. धों. महानोर ने संत तुकोबा का संदर्भ देते हुए बड़े भाऊ का कार्य 'आकाश के समान विशाल है' ऐसा कहते हुए आदरांजलि अर्पण की। दलीचंद जैन ने मानवतावादी दृष्टि रखनेवाले व्यक्तित्त्व के रूप में बड़े भाऊ के कार्य को दर्शाते हुए कहा कि गाँधी

ग्राम स्वराज्य किर्तन के माध्यम से लोक जागृति की पहल - गुलाबराव महाराज

विचार आधारित ट्रस्टीशीप की संकल्प को अपने जीवन में साकार रूप दिया। उसीकी बदौलत वावडदा गाँव में आज बहुउद्देशीय केंद्र का भूमि पूजन किया जा रहा है। भाऊ के द्वारा ऐसे कई कार्य जनहित के लिए किए गए है हमें गर्व हो रहा है कि ऐसी व्यक्ति हमारे बीच में रही और हमारा मार्गदर्शन किया। अशोक जैन ने फाउण्डेशन के द्वारा कार्यान्वित बा-बापू १५० के अंतर्गत ग्राम विकास की योजना में वाकोद और वावड़दा गाँवों को भी सम्मिलित करने का आह्वान किया। इसके अंतर्गत शिक्षा, आरोग्य, पानी, खेती, जलसंधारण आदि कार्य लोकसहभाग द्वारा किए जाएंगे। इस अभिव्यक्ति से ग्रामजनों में खुशी की लहर फैल गई और लोकभागीदारी आधारित कार्य के लिए अपनी तैयारी दर्शाई।

ज्ञानेश्वर शेंडे ने प्रास्ताविक में वावड़दा गाँव से संबंधित जैन परिवार के रिश्ते को प्रस्तुत किया। श्रद्धेय बड़े भाऊ की माताजी का जन्म गाँव और भाऊ के ऋणानुबंध का धागा स्पष्ट किया। कार्यक्रम की यशस्विता के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं वावडदा गाँव के ग्रामस्थों ने जहमत उठाई थी।

गौराई हिरालालजी जैन बहुउद्देशीय केंद्र के भूमि पूजन के दौरान उपस्थित गणमान्य

वावडदा गाँव में स्व. गौराई हिरालालजी जैन बहुउद्देशीय केंद्र के भूमि पूजन के अवसर पर फाउण्डेशन के संचालक दलीचंद जैन, सुरेशदादा जैन, ना. धों. महानोर, डॉ. सुभाष चौधरी, राजाभाई मयूर, अनिल जैन, अतुल जैन, गिरधारीलाल ओसवाल, अथांग जैन, वावडदा गाँव के सरपंच आशाबाई भिल एवं ग्रामस्थ उपस्थित थे। ♦♦♦

डॉ. भवरलालजी जैन शुद्ध पेयजल योजना कार्यान्वित

फाउण्डेशन द्वारा चयनित गाँवों में पीने युक्त पानी की समस्या का समाधान करने के लिए कार्य क्षेत्र के गाँवों में डॉ. भवरलालजी जैन शुद्ध पेयजल योजना का क्रियान्वयन किया गया। गाँव के प्रत्येक परिवार को शुद्ध पानी उपलब्ध होना चाहिए यह श्रद्धेय बड़े भाऊ की ख्वाहिश थी। उनके दूसरे श्रद्धावंदन दिवस के उपलक्ष्य में इस संयंत्र का लोकार्पण किया

धानोरा ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए श्रीमान अशोक जैन

गया। इस योजना के अंतर्गत प्रति व्यक्ति प्रतिदिन चार लीटर के हिसाब से पानी दिया जाएगा। इस प्रकल्प की देखभाल व रखरखाव की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत के माध्यम से जैन इरिगेशन कंपनी पूर्ण करेगी। इस संयंत्र का रखरखाव खर्च के लिए प्रति लीटर पाँच पैसा सामुदायिक योगदान प्राप्त किया जाएगा। जलगाँव स्थित धानोरा इस योजना का दूसरा गाँव है इससे पहले इस योजना का पहला संयंत्र कुरंगी गाँव में स्थापित किया गया है।

इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों ने अपने मनोगत व्यक्त किए ना. धों. महानोर ने अपना मनोगत व्यक्त करते हुए कहा कि अशुद्ध पानी पीने से सर्वाधिक बीमारियाँ होती हैं। इसलिए ग्रामीण भाग की जनता को शुद्ध पानी मिल सके, यह बड़े भाऊ की आंतरिक इच्छा थी। फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन ने कहा कि धानोरा गाँव की खेती सहित पीने के पानी की समस्या से निपटने की दृष्टि से कदम उठाए जाएंगे। ग्रामस्थ संतोष पाटील ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर गाँव के शुद्ध पेयजल योजना के लाभार्थियों के हाथों में पेयजल स्मार्टकार्ड प्रदान किए गए। फाउण्डेशन के कार्यकर्ता विनोद रापतवार ने प्रास्ताविक एवं सुधीर पाटील ने सूत्र-संचालन किया। ♦♦♦

विश्व जल दिवस पर विभिन्न जन-जागृति कार्यक्रम

जलयात्राः महाराष्ट्र एक अध्यात्मिक रूप से रंगा हुआ प्रदेश है। यहाँ वारकरी संप्रदाय की नींव इतनी गहरी है कि जीवन के हर पहलू में आपको अध्यात्म का दर्शन होता दिखाई देता है। पानी के साथ भी अध्यात्म का नजदीकी रिश्ता है। इसकी एक झलक जैन इरिगेशन, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा तापी विकास महामंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में २२ मार्च के दौरान विश्व जलदिवस पर आयोजित जलयात्रा में दिखाई दी। इस जलयात्रा के द्वारा यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि जल ही जीवन का आधार है। यह हमारे अस्तित्व के साथ नजदीक रुप से जुड़ा हुआ है। जल जीवन के हर पहलू के साथ जुड़ा हुआ है। इसके बगैर हमारे अस्तित्व को टिकाए रखना संभव नहीं है।

२२ से २७ मार्च तक आयोजित जल सप्ताह की शुरुआत जलयात्रा से की गई थी। इस यात्रा का शुभारंभ जलगाँव के जिलाधिकारी किशोरराजे निंबालकर ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस यात्रा के आरंभ में जिलाधिकारी द्वारा जल प्रतिज्ञा पढ़ी गई। जलगाँव स्थित गाँधी उद्यान से भाऊ के उद्यान तक आयोजित इस जलयात्रा में जलगाँव शहर की कई सामाजिक संस्थाएं, युवासमूह, अनुभूति विद्यालय के छात्र, जैन स्पोर्ट्स अकादमी के सभी खिलाड़ी व सहकारी, पत्रकार समूह तथा नगरजन सम्मिलित थे। इस यात्रा में जल से संबंधित विभिन्न संदेशों को प्रस्तुत करने के लिए बैलगाडी व ट्रेक्टर पर जल कलश सजाया गया था। भाऊ के उद्यान में जलयात्रा का

जलयात्रा का उद्घाटन जिलाधिकारी के कर कमलों द्वारा

समापन करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि मानवीय जीवन के सामने पानी का प्रश्न अत्यंत गंभीर रूप से खड़ा है। अगर आज से ही हमने पानी का नियोजन किया तब जाकर भावी पीढ़ी को पानी मिलेगा। इस प्रश्न की गंभीरता को समझकर पानी का संरक्षण करना चाहिए। पानी के संरक्षण के प्रत्येक उपक्रम में नागरिकों की सहभागिता होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने कहा कि जलयात्रा के आरंभ में जो जल प्रतिज्ञा ली है उसको निष्ठा के साथ अपने जीवन में आचरण करना है। फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य दलीचंद जैन ने कहा कि जैन इरिगेशन पानी के संदर्भ में हमेशा संवेदनशील रहा है। इसलिए इस विषय में प्रारंभ से ही हम सकारात्मक रवैया रखते हुए पहल करते रहे हैं।

पानी के प्रति संवेदना जगाने के लिए इस जल सप्ताह में हर रोज विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। उनमें डॉ. धनंजय नेवाडकर ने मिट्टी के द्वारा पानी का संरक्षण कैसे कर सकते हैं, इस विषय पर अपनी बात में कहा कि नाला बांधने करने के बजाय हमें छोटे पहाड़ों पर पानी को रोकने का प्रयास करना चाहिए। वर्धमान भंडारी ने मुसली गाँव के जल संरक्षण कार्य के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की।

पोस्टर प्रदर्शन के द्वारा जल संरक्षण व संवर्धन का संदेश:

जल साक्षरता पर आयोजित प्रदर्शनी का निरीक्षण करते हुए श्रीमती प्रतिभा पाटील

जलयात्रा में उपस्थित विभिन्न विद्यालय व महाविद्यालय के छात्र गण

भाऊ के उद्यान में जल संवर्धन पर पोस्टर प्रदर्शन का आयोजन किया गया था। जैन इरिगेशन के आर्टिस्ट आनंद पाटील ने जल बचत, जल साक्षरता व उनकी संकल्पना को ५८ पोस्टर्स के माध्यम से उत्कृष्ट रूप से दर्शाया था। इस प्रदर्शन का उद्घाटन फाउण्डेशन के संचालक मंडल के सदस्य दलीचंद जैन ने किया। तुषार चिनावलकर ने जिला की विभिन्न सिंचन परियोजना के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि नेचर फॉर वॉटर के द्वारा प्रकृति के साथ रहते हुए पानी की बचत करनी चाहिए। भुजंगराव बोबडे ने पारंपरिक जल व्यवस्थापन के संदर्भ में ऐतिहासिक पहलू को प्रस्तुत किया। यहाँ तक कि पानी पर हमारे कई मराठी और हिंदी गाने व कविता भी मशहूर हैं। कई कवि समूह ने इस विषय को प्रस्तुत किया।

'पानी' इस विषय पर अक्षरलेखन प्रस्तुत करने के लिए पंकज नागपूरे उपस्थित थे। काव्य प्रस्तुतिकरण में सुशील पगारीया, अनुभूति स्कूल की संचालिका निशा जैन तथा डॉ. किसन पाटील प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में खानदेश की सुप्रसिद्ध कवियित्री बहिणाबाई की कविता को भी सादर प्रस्तुत किया गया। डॉ. किसन पाटील ने लोक साहित्य में जल तत्त्व, ज्ञानेश्वर शेंडे ने विद्याधर करंदीकर व बा. भ. बोरकर की कविता प्रस्तुत की। श्रीपाद जोशी एवं दीपक चांदोरकर ने भी विनया जोशी व उस्मानभाई की रचना को प्रस्तुत किया।

पानी विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया था। इस प्रतियोगिता में नर्सरी से ४ कक्षा तक ५ वीं से १० वीं और खुला गुट ऐसे तीन गुट में प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता को जिला कक्षा पर अद्वितीय प्रतिसाद प्राप्त हुआ और करीब १८५ प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया।

जल सप्ताह के समापन समारोह में डॉ. दीपक पाटील ने पानी और आरोग्य विषय पर अपनी बात प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि सभी प्राणिओं के लिए पानी अत्यंत महत्त्व का तत्त्व है। मानव शरीर में ६० प्रतिशत पानी होता है। इसका मतलब यह है कि ६५ किलो वजन वाले एक व्यक्ति के शरीर में करीब ४० लीटर पानी होता है। इसी समारोह में श्याम कुमावत ने रंग का सही इस्तेमाल करते हुए लाइन ड्रोईंग के माध्यम से पानी के संदेश को आकार दिया। पीने योग्य पानी के संदर्भ में विभिन्न मतमतांतर के संदर्भ में जैन इरिगेशन के सहकारी श्रीपाद जोशी और अभिषेक निरखे ने अत्यंत रोचक जानकारी प्रस्तुत की। इस समारोह में जैन इरिगेशन के द्वारा निर्मित पानी विषय पर एक लघु फिल्म प्रस्तुत की गई।

इस सप्ताह के दौरान पानी की संवेदना को समझते हुए अन्य कई विषयों पर प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम में जैन इरिगेशन के सहकारी अनिल जोशी, दिनेश दीक्षित, दिपक चांदोरकर, श्रीपाद जोशी, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के सहकारी भुजंगराव बोबडे, विनोद रापतवार, औरंगाबाद विभाग के विभागीय आयुक्त डॉ. पुरुषोत्तम भापकर तथा तापी विकास महामंडल के अधिकारी वृंद व अन्य सहकारियों ने अपने बहुमूल्य योगदान से जल सप्ताह को साकार किया। ♦♦♦

सहकारिता की नई पहल का शुभारंभ

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के मार्गदर्शन में जलगाँव जिला के रंवजा खु. गाँव में माऊली पुरुष बचत गुट के माध्यम से पशु खाद्य सामग्री विक्री केंद्र का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के डॉ. जॉन चैल्लदूरै व रमेश वाणी ने मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम में गुट के अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष तथा सभी सभासद उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के लिए राहुल लांबोळे, चंद्रकांत चौधरी और प्रशांत सुर्यवंशी आदि का अनमोल सहकार्य मिला। ♦♦♦

संस्कार सिंचन का आधार ग्रीष्म शिविर

फाउण्डेशन द्वारा ग्रीष्म की छुट्टियों में हर साल बाल एवं युवा शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों का उद्देश्य यह है कि ग्रामीण भागों में बसे समुदाय के बच्चों को शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक रुप से सुदृढ्ढ बनने का मौका प्रदान करना। इसी उद्देश्य के आधार पर वर्ष २०१८ के लिए एक बाल शिविर और दो युवा शिविरों का सफल कार्यान्वयन किया गया।

युवा शिविर (वाकोद): पहला युवा शिविर १४ से १६ अप्रैल २०१८ को जलगाँव जिले के वाकोद गाँव में स्थित जैन फार्म हाउस में रखा गया था। तीन दिन के इस निवासी शिविर में युवाओं को परिश्रम, कला-कौशल, खेल-भावना, सामूहिक जीवनशैली, स्वावलंबन जैसे मूल्यों

वाकोद गाँव में आयोजित श्रम संस्कार युवा शिविर का उद्घाटन सत्र

युवा शिविर में कृषि विषयक जानकारी साझा करते श्रीमान विनोदसिंह राजपूत

का सिंचन करने के उद्देश्य से विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया था। इनमें कुतूहल फाउण्डेशन के महेश गोराडे ने विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रस्तुत किए थे। आशा फाउण्डेशन के गिरीश कुलकर्णी ने स्वावलंबन का महत्व और सादगीपूर्ण जीवनशैली, भूगोल की प्राथमिक जानकारी तथा आकाश दर्शन के लिए अमोध जोशी, व्यक्ति और समाज के प्रति बृहत नजरिया प्रदान करने के लिए फाउण्डेशन की टीम ने विभिन्न विषयों पर चर्चा सत्र आयोजित किए थे। कृषि विषयक जानकारी साझा करने के लिए जैन फार्म हाउस के व्यवस्थापक विनोदसिंह राजपूत उपस्थित थे। हमारे ऐतिहासिक विरासतों को जानना व समझना अत्यंत आवश्यक है यही उद्देश्य के आधार पर फाउण्डेशन के सहकारी भुजंगराव बोबडे उपस्थित थे। उन्होंने जलगाँव में स्थित ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी शिविरार्थियों के साथ साझा की थी।

उक्त शिविर में जलगाँव जिले के वाकोद, फर्दापुर, पलासखेड़ा, कुंभारी खु., जांभोल आदि गाँवों से करीब १८ युवती एवं ३० युवा सहभागी हुए थे।

बाल शिविर: बाल शिविर जलगाँव जिला के बोरखेड़ा गाँव में २१ से २५ अप्रैल तक आयोजित किया गया था। जिसमें उम्र ९ से १३ साल तक के ५२ बच्चे सम्मिलित हुए थे। इस निवासी शिविर में बाल प्रवृत्ति के लिए परिश्रम, व्यक्तित्व विकास, स्वावलंबन, स्वच्छता तथा संस्कार सिंचन की गतिविधियों को प्राथमिकता दी गई थी। इस शिविर में अंध श्रद्धा निर्मूलन समिति के दिगंबर कट्यारे ने विभिन्न प्रयोगों के द्वारा श्रद्धा और विज्ञान की संकल्पना स्पष्ट की थी। बचपन में हम अपने अक्षर को सुंदर करने का प्रयास करते है तो वह कामयाब होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है इसी उद्देश्य से जैन इरिगेशन के किशोर कुलकर्णी उपस्थित हो कर बच्चों के सामने सुंदर अक्षर से जुड़े विभिन्न युक्तियों को साझा किए थे। पीजी डिप्लोमा के छात्र गणेश चाफेकर और धनश्री ने ओरीगामी, पर्यावरण पर चारुलता मोरे, अभिनय कला के लिए मयूर गिरासे उपस्थित थे। सामाजिक अनुशासन पर श्रीमान अब्दुलभाई ने महत्वपूर्ण मार्गदर्शन किया। तथा महात्मा गाँधी के जीवन से विभिन्न प्रेरणादायी प्रसंग व गीत से बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता आशुतोष कुमठेकर उपस्थित थे। इस पूर्ण शिविर का संचालन फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सुधीर पाटील तथा विनोद रापतवार ने किया।

इस शिविर में जलगाँव जिले के दापोरा, धार, शेरी, चावलखेड़ा, एकलग्न, वाकुटुकी, रवंजे, खर्ची इन गाँवों से करीब ५२ बच्चे उपस्थित थे।

युवा शिविर (शेरी): इस श्रृंखला का तीसरा शिविर जलगाँव के शेरी गाँव स्थित प्राथमिक विद्यालय में २७ अप्रैल से २ मई तक आयोजित किया गया था। इस शिविर में उक्त दर्शाए गए विषयों के अतिरिक्त संवाद कौशल प्रस्तुत करने के लिए जलगाँव के सुरेश पांडे उपस्थित थे। नागरिक कर्तव्य एवं युवा शक्ति विषयक कई वैयक्तिक अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए प्रवीण अकादमी से कैलाश पाटील उपस्थित थे। लोक संगीत की धारा और तुकडोजी महाराज, संत गाडगे बाबा जैसे संतो के बारे में जानकारी साझा करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता आशुतोष कुमठेकर उपस्थित थे। पर्यावरण के प्रति संवेदना एवं पानी हमारे जीवन का आधार है यह बात प्रस्तुत करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यकर्ता विनोद रापतवार उपस्थित थे। विनोद रापतवार ने लोक संवाद के माध्यम से शेरी गाँव के ग्राम समुदाय के साथ पानी विषयक अपनी बात रखते हुए कहा कि 'अपना गाँव अपना अपना खेत' और उनमें लगने वाला पानी हमारे पास होना आवश्यक है। अगर हम लोक भागीदारी के आधार पर योग्य नियोजन करने की आवश्यकता महसूस करते है तो हम साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे। व्यक्ति और समाज के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि प्रदान करने के लिए फाउण्डेशन के डीन जॉन चैल्लदूरै ने शिविरार्थियों के सामने विभिन्न प्रणाली प्रस्तुत की। जैन इरिगेशन के कलाकार विजय जैन ने चित्रकला सत्र में वारली पेंटिंग पर प्रकाश डाला और अपना अनुभव शिविरार्थियों के साथ साझा किया। वरिष्ठ गाँधी विचारक अब्दुलभाई ने शिविरार्थियों के व्यक्तिमत्व विकास में एक-एक कडी का योजनापूर्वक उपयोग करके स्वॉट टेस्ट हो या व्यावहारिक ज्ञान का इस्तेमाल करने की पद्धति खेल-खेल में सिखाई। शिविर में प्रेरणा गीत और बाल गीतों से शिविरार्थियों के उत्साह को बरकरार रखने में प्रशांत सूर्यवंशी एवं आशुतोष कुमठेकर का महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ।

इन सारे शिविर में तीनों गाँव के ग्रामजन, पंचायत समिति एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकवृंद तथा फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी, चंद्रकांत चौधरी, मयूर गिरासे, पीडी डिप्लोमा के छात्र गणेश चाफेकर, विक्रम अस्वार, ज्ञानेश्वर शिरसाट, धनश्री पाडवी, चारुलता मोरे तथा इस शिविर का संचालन सुधीर पाटील, आशुतोष कुमठेकर और विनोद रापतवार के रचनात्मक अभिगम से शिविरार्थियों को कुछ नया देने में सफलता प्राप्त हुई, साथ-साथ ग्रामीण जीवन में परिवर्तन की पहल इन्हीं शिविरों के माध्यम से सार्थक हो रही है। ♦♦♦

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का ब्यौरा

हमारी सांस्कृतिक धरोहर मूल्य आधारित रही है, उनकी हिफाजत करने का कार्य वर्तमान और भावी पीढी के जिम्मे है। मानव समुदाय की बेहतरि के लिए इनका जितना फैलाव किया जा सके उतना करना चाहिए। जिससे आनेवाली पीढी को स्पष्ट और निश्चित दिशा दर्शन प्राप्त हो सके। इस उद्देश्य से महाराष्ट्र के जलगाँव जिला से २००७ में फाउण्डेशन ने 'गाँधी विचार संस्कार परीक्षा' (GVSP) नामक एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम कार्यान्वित किया है। शाश्वत जीवन मूल्यों की अनौपचारिक शिक्षा देनेवाला यह कार्यक्रम माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों, वैद्यकीय तथा अभियांत्रिकी धाराओं समेत सभी व्यावसायिक तथा तांत्रिक शैक्षणिक संस्थाओं में हर साल आयोजित किया जाता है। इनका प्रभाव इतना फैला की महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, गोवा, गुजरात, दिल्ली आदि राज्यों के विद्यालयों व महाविद्यालयों में हर साल यह उपक्रम आयोजित होने लगा है। यहाँ तक की फाउण्डेशन के इस कार्य की सराहना करते हुए महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश की सरकार ने GVSP आयोजित करने के लिए विशेष परिपत्र घोषित किया है। पाठशालाओं के साथ साथ विभिन्न

जिला कक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह, महाराजा सयाजीराव विद्यालय, सातारा

कारागृहो में भी इस परीक्षा का आयोजन हर साल होता है। इस कार्यक्रम के द्वारा हजारों बंदीजन को समाज कि मुख्य धारा के साथ जोडने का प्रयास किया जाता है।

वर्ष २०१७-१८ में करीब २,०७,८०७ छात्रों व शिक्षक मित्रों ने इसमें हिस्सा लिया। गाँधी विचार संस्कार परीक्षा की विस्तृत जानकारी दर्शाता यह रिपोर्ट हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे है।

वर्ष २०१७-१८ के इन परीक्षाओं का पुरस्कार वितरण समारोह महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा गुजरात के विभिन्न प्रांतो में संपन्न हुआ।

महाराष्ट्र: गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का बड़ा क्षेत्र महाराष्ट्र है, वर्ष २०१७-१८ में इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र से करीब १,९२,५६६ छात्र-छात्राएं सहभाग हुए थे। प्रस्तुत वर्ष का पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन विभिन्न जिलों के विद्यालय तथा महाविद्यालय में आयोजित किया गया था। उनमें यवतमाल से गुलाम नबी आझाद समाज कार्य महाविद्यालय, जी. एस. कॉमर्स कॉलेज, नागपूर, मानवलोक समाज विज्ञान महाविद्यालय, अंबाजोगाई (बीड), छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, सिडको (औरंगाबाद), महाराजा सयाजीराव गायकवाड विद्यालय, सातारा, जगन्नाथ पेडणेकर विद्यालय, लांजा (रत्नागीरी) तथा रयत शिक्षण संस्था पनवेल (मुंबई तथा रायगड़) इन विद्यालय तथा महाविद्यालयों में जनवरी मास में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा के जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया है।

गाँधी निर्वाण दिन, जलगाँव: ३० जनवरी २०१८ को महात्मा गाँधीजी की ७० वीं पुण्यस्मृती के अवसर पर जलगाँव शहर के कांताई सभागृह में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह तथा गाँधी विचार पर मंथन कार्यक्रम संपन्न हुआ। उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलगुरू डॉ. के. बी. पाटील की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में जलगाँव जिला के जिलाधिकारी किशोरराजे निंबालकर, जिला पोलिस अधिक्षक दत्तात्रय कराले तथा गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के विश्वस्त सेवादास दलुभाऊ जैन प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित थे। वर्ष २०१७ में जलगाव जिले से १९२ विद्यालय-महाविद्यालय इस उपक्रम में सम्मिलित हुए। बदलती हुई विकास की परिभाषा और गाँधी विचारों की शाश्वत धरोहर पर डॉ. के. बी. पाटील ने अपने विचार व्यक्त किए। इस परीक्षा में सहभागी होने का आनंद तथा गाँधी विचारों का प्रशासनिक कार्यो में उपयोग इस पर जिलाधिकारी किशोरराजे निंबालकर ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से समन्वयक उदय महाजन तथा चंद्रशेखर पाटील उपस्थित थे। कार्यक्रम का सुत्र-संचालन भुजंगराव बोबडे ने किया।

कर्नाटक: वर्ष २०१७-१८ में कर्नाटक राज्य से करीब ८,७७७ छात्र-छात्राएं इस परीक्षा में सम्मिलित हुए थे। ११ फरवरी को कर्नाटक के गाँधी स्मारक निधि और गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में गाँधी भवन बेंगलोर में कर्नाटक का राज्यस्तरीय पुरस्कार वितरण कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में भूतपूर्व रेल्वेमंत्री जाफर मलिक, भूतपूर्व मंत्री एच. हनमंतअप्पा, कर्नाटक के गाँधी स्मारक निधि के अध्यक्ष वूडी पी. कृष्णा, उपाध्यक्ष बी. शिवराजू और कर्नाटक राज्य समन्वयक डॉ. अबिदा बेगम आदि मान्यवर इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से परीक्षा विभाग के समन्वयक भुजंगराव बोबडे उपस्थित थे।

गुजरात: गुजरात राज्य में गाँधी विचार संस्कार परीक्षा का यह पहला साल था और इस साल करीब ५,२५५ छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए थे। गुजरात राज्य में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम तीन प्रदेशों में किए गए थे। २१ फरवरी को लोकनिकेतन शिक्षण संस्था रतनपूर-पालनपुर में किरणभाई चावडा के मार्गदर्शन में साबरकांठा, बनासकांठा, महेसाणा और पाटन चार जिलों का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम को अंजाम दिया गया। इस कार्यक्रम में लोकनिकेत शैक्षणिक संस्थान की प्राचार्या सौ. भारतीबहन कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। इस श्रृंखला का दूसरा कार्यक्रम २३ फरवरी को ग्लोबल इंडियन इंटरनॅशनल स्कूल, अहमदाबाद में आचार्य साहब तथा शिक्षक मित्रों की उपस्थिति में अहमदाबाद, आणंद तथा खेड़ा इन तीन जिलों का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम किया गया। दक्षिण गुजरात के कार्यक्रम के लिए २४ फरवरी को फैज ए. ए. चक्कीवाला गर्ल्स हाइस्कूल, सुरत में फारुख पटेल की अध्यक्षता में तथा आचार्य समीमबहन की उपस्थिती में कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में सुरत, वलसाड, नवसारी तथा दमन को मिलाकर चार जिलों के पुरस्कार छात्रों एवं शिक्षक मित्रों को वितरीत किए गए।

उपरोक्त कार्यक्रम में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता भुजंगराव बोबडे तथा अश्विन झाला उपस्थित थे।

समाज के लिए आदर्श

जलगाँव जिला पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित महानुभाव

वर्ष २०१७-१८ के लिए जलगाँव जिले के जिलाधिकारी किशोरराजे निंबालकर, मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा कौस्तुभ दिवेगावकर, जिला पोलिस अधिक्षक दत्तात्रय कराळे, पोलिस उप अधिक्षक सचिन सांगले आदि प्रशासकीय अधिकारीयों ने गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सहभाग लेकर गाँधी विचारों को समझने का उमदा प्रयास किया। इन महानुभावों ने समुदाय के सामने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया की विद्यार्थी काल केवल कोई सिमित समय तक नहीं किंतु आजीवन सिखने की जिज्ञासा होती है। ♦♦♦

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में एक लाख छात्रों का निःशुल्क समावेश

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा (GVSP) में सम्मिलित होने वाले छात्रों का प्रवेश शुल्क के लिए न्यूनतम मूल्य आकारित किया जाता है। इसमें प्राथमिक पत्रव्यवहार, किताब, प्रश्नपत्र, प्रमाणपत्र, पुरस्कार भी सम्मिलित है। इस कार्य में फाउण्डेशन अपना योगदान प्रदान करता है। फिर भी, कई छात्र ऐसे है जो प्रारंभिक शुल्क भी अदा नहीं कर पाते, इसलिए वर्ष २०१६-१७ में हमने भारत सरकार की अनुमति से 35 AC के अंतर्गत कुछ कायिक फंड प्राप्त किया है। इस कायिक फंड के ब्याज में से भारत के विभिन्न प्रांतों के आर्थिक रुप से निर्बल परिवार से संबंधित करीब एक लाख छात्रों को गाँधी विचार संस्कार परीत्रा में निःशुल्क समावेश किया जाएगा। ♦♦♦

विश्व योग दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

आज के तनाव भरे वातावरण में योगासन व प्राणायम हमें नई ऊर्जा व चेतना प्रदान करते है। उनके अभ्यास के द्वारा हम शारिरीक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से अपने आपको तरो ताजा रख पाते है। योग के महत्व को ध्यान में रखते हुए गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन एवं जैन इरिगेशन के सहकारियों द्वारा सामूहिक रुप से जैन वैली स्थित एनर्जी पार्क में २१ जून को योग दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम में जैन इरिगेशन द्वारा कार्यरत निरामय नैचरोपॅथी के डॉ. गोविंद तिवाडी और श्वेता तिवाडी ने विभिन्न योगमुद्रा एवं सुक्ष्म व्यायाम का अभ्यास करवाया उपरांत हमारे जीवन में योग का महत्व तथा उनसे संबंधित जानकारी भी सहकारियों के साथ साझा किया।

योगाभ्यास में व्यस्त सहकारियों का समूह

दापोरा: २१ जून विश्व योग दिन के अवसर पर जलगाँव जिला के दापोरा गाँव की प्राथमिक शाला में एक दिवसीय योग शिविर तथा आहार शास्त्र व्यवस्थापन पर बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान किया। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ता सागर चौधरी तथा शिक्षक रवि पाटील ने यह कुतूहल पूर्ण विषय को बच्चों तक तथा शिक्षकों तक पहुँचाने का नेक प्रयास किया। रवि पाटील ने विभिन्न यौगिक मुद्रा व उनका महत्व बच्चों के साथ साझा किया। खुराक की संवेदना के आधार पर सागर चौधरी ने खुराक उत्पन्न करने कि प्रक्रिया को साझा करते हुए कहा कि कड़ी मेहनत व संसाधन की आवश्यकता के आधार पर हम खुराक उत्पन्न करते है। इसलिए जितना आवश्यक है उतना ही भोजन हमें थाली में लेना चाहिए। इस बहुमूल्य भोजन को बरबाद करना सबसे बड़ा अपराध है। इस संवाद कार्यक्रम के द्वारा बच्चों में भोजन के प्रति संवेदना निर्माण हुई।

इस कार्यक्रम में १४३ छात्र-छात्राएं, विद्यालय के शिक्षक समूह उपस्थित थे।

बोरखेड़ा: जलगाँव के बोरखेड़ा गाँव में पीजी डिप्लोमा के छात्र गणेश चाफेकर तथा विक्रम अस्वार ने विश्व योग दिवस के अंतर्गत प्राथमिक शाला के छात्रों को योगाभ्यास जिनमें प्रार्थना, सूक्ष्म योग, सूर्य नमस्कार तथा विभिन्न योगासन और प्राणायाम का अभ्यास करवाया। एवं उनके महत्व के बारे में विशेष जानकारी प्रस्तुत की।

इस कार्यक्रम को यशस्वी बनाने के लिए जिला परिषद के मुख्याध्यापिका, शिक्षक समूह और बच्चों के माता-पिताओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

बंदीगृह: गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की ओर से जिला बंदीगृह में विश्व योग दिवस मनाया गया। उपस्थित बंदीजनों को डॉ. गोविंद तिवाडी तथा श्वेता तिवाडी ने योगाभ्यास का महत्व बताया। पश्चात कुछ आसन और हास्य योग संबंधित, तालियां बजाकर (क्लेपिंग थेरपी) शरीर में होनेवाली ऊर्जा निर्माण का महत्व दैनंदिन जीवन में बहुत ही आवश्यक होने का प्रतिपादन डॉ. गोविंद तिवाडी ने किया। बंदीजनों ने बहुत ही अनुशासनप्रिय तरीके से योगासन करके अपना उत्साह भरा सहयोग जताया। इस प्रसंग में मंच पर जिला कारागृह अधीक्षक भानुदास श्रीराव, जैन इरिगेशन के सहकारी दिनेश दीक्षित, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संतोष भिंताडे उपस्थित थे। इसके साथ भिंताडे जी ने भी गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के गतिविधियों की समर्पक जानकारी देते दैनंदिन जीवन में योगाभ्यास का महत्व बताया। कारागृह अधीक्षक भानुदास श्रीराव ने गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा जैन इरिगेशन सिस्टिम्स के द्वारा आयोजित इस बहुमूल्य कार्यक्रम के लिए आभार व्यक्त किया। ♦♦♦

रिंगणगाँव में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

२१ जून के दिन फाउण्डेशन द्वारा किसान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। इस शिविर का मुख्य विषय खरीफ २०१८ की मुख्य फसलें कपास, सोयाबीन, मक्का तथा अनुबंधित खेती पर मार्गदर्शन करना रहा।

जैन इरिगेशन के कृषि विद् मार्गदर्शक डॉ. बी. डी. जडे तथा अनुबंधित खेती व्यवस्था प्रमुख गौतम देसरडा ने किसानों का मार्गदर्शन किया। मुख्य फसल कपास पर डॉ. जडे ने बीज का योग्य चुनाव लागत का अंतर, प्रति एकड़ पौधों की संख्या, खाद व्यवस्थापन, रोग-कीट नाशक व्यवस्थापन, ट्रॅप क्रॉप का नियोजन तथा कपास लगाने की विधि बताई। गौतम देसर्डा ने वर्तमान में चल रही अनुबंधित खेती के अंतर्गत सफेद प्याज, लाल मिर्च, अदरक तथा हल्दी फसल पर उपयुक्त जानकारी दी। इस प्रशिक्षण शिविर में कुल ५० किसान उपस्थित थे।

किसानों ने अपने महत्त्वपूर्ण सवाल पुछकर ज्यादा से ज्यादा उत्पादन प्राप्त करने के लिए आवश्यक जानकारी हासिल की। कार्यक्रम में रिंगणगाँव की सरपंच सौ. कुलकर्णी, डॉ. कुलकर्णी, डॉ. बी. डी. जडे, गौतम देसर्डा, श्रीराम पाटील, प्रवीण सूर्यवंशी, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ता आशुतोष कुमठेकर, चंद्रकांत चौधरी, प्रशांत सूर्यवंशी, तथा सागर चौधरी उपस्थित थे। ♦♦♦

सच्चे सर्वोदयी कार्यकर्ता लताताई पाटणकर को श्रद्धांजली

स्व. लताताई पाटणकर

ज्येष्ठ गाँधीवादी, समाजसेविका लताताई पाटणकर का २१ फरवरी २०१८ को ८५ साल की उर्म में बिमारी के कारण निधन हो गया है। लताताई पाटणकर एक ऐसे कर्मयोगी थी जिन्होंने अपना जीवन देश व मानव सेवा के लिए अर्पित किया। पारिवारीक समृद्धि व संपन्नता होने के बावजूद भी उन्होंने स्वयंप्रेरित सादगी को स्वीकार किया था। शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर अपनी सारी जमा पुंजी के द्वारा जलगाँव के नजदीक वावडदा नामक गाँव में एक खेत खरीदकर उसमें आंगणवाडी कार्यकर्ताओं का एक प्रशिक्षण केंद्र निर्माण किया तथा एक छात्रालय का निर्माण कर आर्थिक रुप से असक्षम परिवार की लडकियों को नि:शुल्क निवास, भोजन व शिक्षा प्रदान करने का कार्य किया।

लताताई पाटणकर जी का मानना था कि सत्याग्रह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। सच्चे सत्याग्रही को सदा कांटो के पथ पर चलने को तैयार रहना चाहिए। यदि वह भी सो जायेगा, तो शासक वर्ग को भ्रष्ट होने से कोई नहीं रोक सकता। इसलिए स्वाधीनता के बाद भी देश में जहाँ कहीं शासन की जनविरोधी नीतियों के विरुद्ध कोई आंदोलन खड़ा होता था, लताताई पाटणकर जी वहाँ पहुँच जाती थी। कोई उन्हें आंदोलन में भाग लेने के लिए बुलाए, वे इसकी प्रतीक्षा नहीं करती। स्वयंस्फूर्त प्रेरणा उन्हें वहाँ खींचकर ले जाती थी।

लताताई पाटणकर जी को भौतिक सुख-सुविधाओं की जरूरत नहीं थी। अपने खर्चे पर बस या रेल, जो भी मिलता, वे उसमें बैठकर अपना सामान स्वयं उठाकर सत्याग्रहियों के साथ अग्रिम पंक्ति में खड़ी हो जाती थी। विनोबा भावे से उनके बहुत अच्छे संबंध थे। भूदान आंदोलन में भी वे सक्रिय रही; तथा चंबल घाटी के डाकूओं के प्रत्यर्पण में भी वे कार्यरत रही।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के साथ लताताई पाटणकर के संबंध साधक रहा है, यहाँ तक की कई कार्यक्रम में उनका मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होता रहा है। वे यह भी चाहती थी कि फाउण्डेशन के साथ मिलकर वावडदा गाँव स्थित उनके आश्रम में ग्राम विकास व सामुदायिक विकास हेतु कुछ नवनिर्माण के कार्य भी किए जाए। पर लताताई की इस पहल का आरंभ होने से पहले ही वे इस विश्व को छोडकर चले गए। हम कोशिश करें की लताताई पाटणकर ने जिन तत्त्वों के आधार पर अपना जीवन समर्पित किया उन विचारों को गहन रुप में समझकर कार्य करने की दिशा में आगे बढते रहेंगे।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन तथा आशा फाउण्डेशन के संयुक्त प्रयास से लताताई पाटणकर के जीवन संस्मरणों को साझा करते हुए श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया था। इस सभा में उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलपती डॉ. के. बी. पाटील, प्रसिद्ध विधिज्ञ सुशील अत्रे, डॉ. अनिल राव, फाउण्डेशन के विश्वस्त दलीचंद जी जैन आदि मान्यवर तथा जलगाँव शहर के प्रमुख नागरिक तथा सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी ने उन्हें शब्द सुमनों से भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की। ♦♦♦

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत* – ***संपादक***

प्रिय महोदय,

'खोज गाँधीजी की' पत्रिका पाकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता होती है। मैं बड़ी उत्सुकता से इस पत्रिका का इंतजार करता हूँ।

मैं आपका इस पत्रिका को भेजने के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

मोहनलाल, *पटियाला (पंजाब)*

....

प्रिय अश्विनभाई,

'खोज गाँधीजी की' को उदयोपांत पूरा पढ़ लिया है। इस छोटी सी पत्रिका की सामग्री ऊँचे स्तर की संयोजित की गई है। गाँधीजी के निर्बल के बल राम पढ़ने के बाद अनेक पाठकों को चिंतन करने की प्रेरणा दी होगी।

गाँधी फाउण्डेशन की गतिविधियों के बारे में पढ़कर आनंद हुआ कि फाउण्डेशन अपने विशेष सोच के अनुसार अपने शैक्षणिक अभ्यासक्रम अथवा युवा कैम्प्स का आयोजन कर रहा है। गाँधी फाउण्डेशन देश भर से लोगों को जोड़ने, प्रेरणा देने व उन्हें सक्रिय करने में जुटा है, यही तो बड़े भाऊ स्व. भवरलाल जैन चाहते थे।

राधा भट्ट, *कौसानी, उत्तराखंड*

....

आदरणीय अशोकभाई,

सस्नेह नमस्कार।

'खोज गाँधीजी की' दिसंबर २०१७ पढ़कर खुशी हुई। संपादकीय में श्री अश्विन झालाजी ने किसी भी व्यवसाय के लिए (फोर एम) १) Money, २) Market, ३) Management, ४) Mind चार तत्त्वों की आवश्यकता कही है। उसके साथ ... Man (मनुष्य) को जोड़ना जरूरी है।

अपने स्वार्थ पर नियंत्रण मनुष्य की सोच बदलने पर आ सकता है। ... मालकियत विसर्जन कि कल्पना विनोबा जी के भूदान ग्रामदान कल्पना में समाविष्ट है। गाँधीजी के ट्रस्टीशीप की कल्पना में भी यही भूमिका है। जब मजदूर को मालिक का दर्जा दिया जाए और मालिक अपने आपको उनका स्वामी न समझे – तभी यह संभव होगा। यह अश्विन झाला ने कहा बिलकुल सही है। उसके लिए आज युवा साथियों को गाँधी विचार – अहिंसक क्रांति के लिए मानवीय सांस्कृतिक क्रांति के लिए प्रवृत्त करना आवश्यक है।... 'खोज गाँधीजी की' यह सत्य व अहिंसा मूल्यों को समर्पित पत्रिका उपयुक्त है। हम साने गुरुजी विद्यालय, मेरीखेडा, महावीर विद्या मंदीर, यवतमाल इन दोनों स्कूलों में गाँधी विचार परिक्षाएँ लेते है। और शिक्षकों के साथ 'खोज गाँधीजी की' त्रैमासिक पत्रिका के संपादकीय और लेख पढ़कर चर्चा-गोष्ठियाँ आयोजित करते है।

सुहास सरोदे, मंगला सरोदे, *यवतमाल*

♦♦♦

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

ए. अन्नामलाई, राष्ट्रीय गाँधी संग्रहालय, नई दिल्ली
०२.०१.२०१८

अखिल भारतीय सरपंच परिषद के लिए जैन हिल्स पधारे हुए प्रतिनिधियों का समूह, ०४.०१.२०१८

दिनेश कुमार जैन, नई दिल्ली
०६.०१.२०१८

जयंत ठाकूर, मुंबई
१२.०१.२०१८

अभिनेत्री सोनाली कुलकर्णी व उनके साथीगण, मुंबई
०९.०२.२०१८

सयाजी शिंदे, अभिनेता, मुंबई
२६.०२.२०१८

अशोक जोशी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, यूएसए
२८.०२.२०१८

फुलबासन देवी यादव, छत्तीसगढ़
१०.०३.२०१८

किसानों का समूह, ओडिशा
१७.०३.२०१८

प्रेस्टिज इंडस्ट्रीज के अधिकारियों का समूह, इंदौर
१८.०३.२०१८

मामोदौ डींग, सेनेगल
१०.०४.२०१८

लियोर ओरेन, इस्राईल
११.०४.२०१८

जैन इरिगेशन कंपनी के सहकारीओं के पाल्य, जलगाँव
०६.०५.२०१८

ड्यू क्लोक, यूएसए
२४.०५.२०१८

सविता बारने, न्यायाधीश, जलगाँव
३०.०५.२०१८

नवनाथ गायकवाड, पुणे
१९.०६.२०१८

कार्लोस लेविल, स्पेन
२०.०६.२०१८

RNI Title Code:- MAHBIL10001

मोहन से महात्मा

चित्रशृंखला-२०

गाँधी - विनोबा

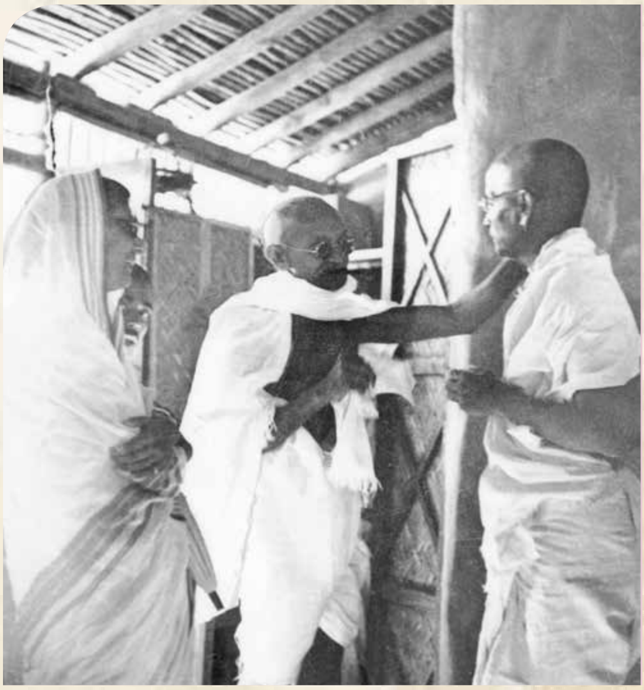

महात्मा गाँधी, विनोबा भावे को व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन की पूर्व संध्या पर हिदायतें देते हुए, सेवाग्राम, अक्टूबर १९४०

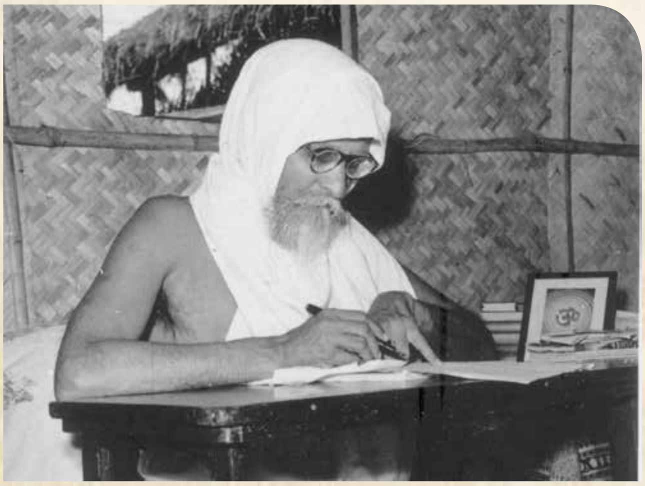

विनोबा भावे, जगन्नाथ पुरी सम्मेलन के दौरान, १९५५

महात्मा गाँधी आचार्य विनोबा भावे के साथ, वर्धा १९३४

महात्मा गाँधी, आचार्य विनोबा भावे के साथ, वर्धा

Who is Vinoba?

He is a Sanskrit scholar. He joined the Ashram almost at its inception. He has taken part in every menical activity of the Ashram from scavenging to cooking. Though he has a marvellous memory and is a student by nature, he has devoted the largest part of his time to spinning. He believes in communal unity with the same passion that I have. He thoroughly believes that non-violent resistance is impossible without active participation in constructive work.

- M. K. Gandhi

विनोबा भावे कौन है?

वे संस्कृत के पंडित हैं। आश्रम के सबसे पहले सदस्यों में से एक हैं। वे आश्रम में सब प्रकार की सेवा-प्रवृत्तियों - रसोई से लेकर पाखाना-सफाई तक में हिस्सा ले चुके हैं। उनकी स्मरण-शक्ति आश्चर्यजनक है। वे स्वभाव से अध्ययनशील हैं, पर अपने समय का ज्यादा से ज्यादा हिस्सा कातने में ही लगाते हैं। सांप्रदायिक एकता में उनका उतना ही विश्वास है जितना कि मेरा। उनका पूर्व विश्वास है कि रचनात्मक कार्य में सक्रिय भाग लिए बगैर अहिंसक प्रतिकार संभव नहीं है।

- मो. क. गाँधी

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह त्रैमासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन इन्होंने आनंद पब्लिकेशन्स्, १०६/१, मुसली फाटा, ता. धरणगाँव, जि. जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र। यहाँ से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र यहाँ से प्रकाशित किया। संपादक - अश्विन भामाभाई झाला।